॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र

वयं राष्ट्रे जागृयामः

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

मई विशेषांक

वर्ष - 10, अंक -01 इन्दौर, मई 2018 मूल्य 30 रुपए

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व

श्रम एव जयते कृषिम् कृषस्व

परिश्रम करो
जुआ मत खेलो

अर्थात्-पांसों में मत खेलो,
कृषि का ही आश्रय लो।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में
आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल इन्दौर में सम्पन्न।

श्री रामेश्वर पटेल (चेयरमेन प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल एवं विद्या सागर गर्ल्स स्कूल, इन्दौर) को प्रतीक चिंह भेंट करते हुये आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, श्री महेन्द्र भाई (राष्ट्रीय महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली), श्री राम कुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक दिल्ली) श्री यशपाल 'यश' (प्रदेशाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान) श्री विरेन्द्र योगाचार्य (महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा) डॉ. सुनील आर्य (दिल्ली)

श्रीमती मंजू नोटियाल (प्रिंसिपल प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल, इन्दौर) को महर्षि दयानंद चित्र भेंट करते हुये श्रीमती गायत्री सोलंकी आचार्य डॉ. भानुप्रताप वेदालंकार, श्री महेन्द्र भाई (राष्ट्रीय महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली), श्री राम कुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक दिल्ली) श्री विरेन्द्र योगाचार्य (महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा)

॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या।
MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

संपादक – आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
E-mail: aacharyabhanu@yahoo.com

वर्ष–10 अंक–01 मई 2018

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राजवीर सिंह (झारखंड)
❖ सहसंपादक ❖
संदीप शजर (दिल्ली)
❖ प्रबंध संपादक ❖
गायत्री सोलंकी, (इन्दौर, म.प्र.)
प्रणवीर शास्त्री (बुलंदशहर, उ.प्र.)
पवन शास्त्री (खण्डवा, म.प्र.)
❖ संपादक मंडल ❖
अमरसिंह वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)
डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार (हरिद्वार, उत्तराखंड)
श्रीमती मनीषा (शांति) विद्यालंकार (म.प्र.)
योगाचार्य उमाशंकर (सूरत, गुजरात)।
रमेशचंद्र विद्यार्थी (हमीरपुर, उ.प्र.)
वीरेन्द्र सरदाना (दिल्ली)
सुखबीर शास्त्री (मुम्बई)
सत्यवीर (हरियाणा)
रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे, नासिक (महा.)
सुश्री सौम्या मिश्रा (बाराबंकी, उ.प्र.)
श्री नवीन तिवारी 'अथर्व' (छ.ग.)
श्रीमती दीपा संजय 'दीप' (उ.प्र.)
नोट :– सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रमणिका

संपादकीय	-	02
वेदाऽमृतम्	-	03
अभिनन्दन-पत्रम्	-	04
सदस्यता आवेदन-पत्र	-	05
पीर का मतलब क्यों पूजें पीर ?	-	06
प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बलराज मधोक	-	07
महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अमूल्य	-	08-10
नास्तिक ईश्वर के सत्यस्वरुप से	-	11-13
आज हमारे समाज व राष्ट्र को देश	-	14
आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्ति	-	15-21
साहित्य संगम संस्थान के 101 लोगों	-	22
साहित्य सं. सं. एवं कवि सम्मेलन	-	23-29
राजवीर सिंह 'मंत्र'	-	30
छाया सक्सेना 'प्रभु'	-	31
सरिता तिवारी	-	32
डॉ. आनन्द किशोर 'आनन्द'	-	33
राहुल प्रसाद	-	34
हरि प्रकाश गुप्ता	-	35
सूर्यकान्त गुप्ता	-	36
अनिता मंदिलवार 'सपना'	-	37
बृजेश पाण्डेय	-	38
आनन्द वर्धन शर्मा	-	39
रवि रश्मि 'अनुभूति	-	40
नीरत अग्रवाल	-	41
सुश्री ए मंसूरी 'आरजू'	-	42
संगीता गुप्ता	-	43
गायत्री सोनू जैन	-	44
नवीन कुमार तिवारी	-	45
डॉ. श्वेता चौबे 'मधुलिका'	-	46
भूपेन्द्र सिंह पंवार 'राजा'	-	47
डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे	-	48
सुधा गगन कनौजे	-	49
दीपा गुप्ता	-	50
डॉ. अरविंद 'दर्द'	-	51
डॉ. सुशीला सिंह	-	52
कवि राज तरुण	-	53
सौम्या मिश्रा 'अनुश्री'	-	54
इन्दू शर्मा शचि	-	55
ओमवीर करन	-	56
श्रीमती कुमुद	-	57
विज्ञापन	-	58-60

❖ मुख्य कार्यालय ❖
219, संचार नगर एक्स, कनाड़िया रोड़, इंदौर (म.प्र.) फोन: 0731-6066067, मो. 09977967777, 09977987777, 09202213410
Email: vaidikrashtra@yahoo.com, Website: www.vaidikrashtra.com
❖ दिल्ली कार्यालय ❖
संदीप शजर – एफ-5, विनायक अपार्टमेंट बुराड़ी (संतनगर) दिल्ली, मो. 09873534060

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। आर.एन.आई. नं./एम.पी.एच.आई.एन / 2009-28723

'वैदिक राष्ट्र' में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र ''इन्दौर न्यायालय'' ही रहेगा।

संपादकीय

जागृत

जो जागते है वो हमेशा स्तुति (प्रशंसा) प्राप्त करते है। यो जागार: तम् ऋचा कामयंते= जो जागते है उन्हें ऋचा-स्तुति-प्रशंसा प्राप्त होती है। संसार में व्यक्ति प्रशंसा की अभिलाषा करता है किन्तु कार्य उसके कार्य विपरीत होते है। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है ''मत्वा कर्माणि सिव्यति'' अर्थात् मनुष्य सभी कार्य सोच - विचार कर करता है जो मनुष्य बिना विचारे कार्य करता है वह पशुवत् होता है।

''जो जागते सो पाते, सो सोते है वो खोते है'' जो मनुष्य जागते है वे लाभ प्राप्त करते है और जो सोते है वे हानि प्राप्त करते है। यहां खोते का अर्थ पंजाबी भाषा गधा भी होता है अर्थात् जो सोते हुये गधे कहलाते है वे पशु कहलाते है। हमें हमेशा मन, बुद्धि और आत्मा से जागृत रहना चाहिए, संसार में कुछ लोग जागने का ढोंग करते है ऐसे व्यक्तियों को जगाना नामुमकिन है। वेद कहता है जो जागते है वो अभिष्ट वस्तु को प्राप्त करते है इच्छित वस्तु को प्राप्त करते है।

ओम् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च।
अस्मिन्त्सधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत॥

वास्तव में जिसकी आत्मा जागृत हो जाती है वे इच्छित वस्तु को प्राप्त कर लेते है।

एक बालक बार-बार पत्थर पर ठोकर खा रहता है और खून से लथपथ था उसी समय राहगीर ने पूछा यह जानबूझकर क्यों ठोकर खा रहे हो तो बालक ने उत्तर दिया मेरी माँ ने कहां है- ''जब तुझे ठोकर लगेगी तब तुझे बुद्धि आयेगी।'' इस प्रकार मैं बुद्धि लाने का प्रयास कर रहा हूँ। संसार में कुछ लोग जबरजस्ती जागृत होने का ढोंग करते है ऐसे व्यक्तियों का कभी भी उद्धार नहीं होता है।

संसार में मार्ग पर लिखा पाते है कि ''सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'' यह केवल मार्ग पर ही नहीं अपितु जीवन रुपी मार्ग में भी यह सिद्ध होता है कि मन एवं बुद्धि से यदि हम विचलित होते है तो कहीं न कहीं नुकसान उठाना पड़ता है जैसे घुड़सवार घोड़े को अपने अनुसार चलाता है वैसे ही आत्मा को भी जागृत अवस्था में रहते हुये मन एवं बुद्धि को कल्याणरुपी मार्ग पर चलाना चाहिए।

एक बार राजा ने अपनी प्रजा से पूछा कि कौन व्यक्ति हमेशा परेशान रहता है तो मंत्री ने कहा जो व्यक्ति अपने जीवन में सावधान नहीं रहता है वह हमेशा परेशान रहता है निश्चित रुप से आज का समाज धन-वैभव आदि नशे में चूर होकर हमेशा बेहोश रहता है जिसके कारण से वह दुखी रहता है। जैसे कुछ नाविक नाव को रात भर चलाते रहे किन्तु वे वहीं के वहीं रहे पर नदी के पार नहीं जा पाये क्योंकि उनकी नाव की रस्सी खूटे से बंधी हुई थी। इसी प्रकार संसार में मनुष्य निरंतर चल रहा है किन्तु अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पा रहा है क्योंकि वह असावधान है वह बेहोश है।

आओं हम जागृत अवस्था को प्राप्त करें, निरंतर हमारा मन, बुद्धि एवं आत्मा जागृत रहे जिससे हम ऋचाओं को प्राप्त करें।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
ई-मेल: aacharyabhanu@yahoo.com
मो. 9977987777, 9977967777

वेदाऽमृतम्

तेरी लीला

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँ अस्ति देवता विदानः ।
न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणु हि प्रवृद्ध ॥

ऋषि :- **अगस्त्य:** ॥ देवता-**इन्द्र:** ॥ छन्द: - **त्रिष्टुप्** ॥

विनय– हे सवैश्वर्यशालिन् मैं आज देख रहा हूँ कि इस विश्व का सब कुछ-छोटे से छोटा और बड़े - से - बड़ा - तेरे हिलाये हिल रहा है। ऐसी कोई भी वस्तु नहीं है जो तेरी प्रेरणा से प्रेरित नहीं हो रही हो। इस ब्रह्माण-सागर की क्षुद्र - से - क्षुद्र और महान् - से महान् सब लहरें तू ही पैदा कर रहा है। जगत् के अनन्त परमाणुओं में जो एक - एक परमाणु प्रतिक्षण गतिशील है, चींटी से कुंजर तक जो सब प्राणी चेष्टा कर हरे है, मनुष्य के वैयक्तिक जीवन और मनुष्य - संघ के समष्टि जीवन में जो नित्य छोटे-बड़े परिवर्तन हो रहे है, भूकम्प, वर्षा, वायु, अग्नि, ऋतु आदि रुप से जो आधिदैविक जगत् निरंतर बदल रहा है- यह एक जगत् क्या, ऐसे-ऐसे जो कोटि - कोटि अनन्त जगत्, जो असंख्यात सूर्य और पृथिवियाँ, इस महाकाश में चक्कर लगा रहे हैं- ये सब - के -सब, तेरी ही दी हुई गति से, तेरी ही प्रेरणा से चल रहे हैं। तू अपनी पूर्ण ज्ञानमयी ठीक-ठीक गति देकर इस सब संसार को नचा रहा है। हम मनुष्य क्या, बड़े-से-बड़े ज्ञानी देव भी तेरे असीम ज्ञान का पार नहीं पा सकते। ये सब तेरे ज्ञान को असीम-अनन्त कह-कहकर अपनी अज्ञानता को ही प्रकाशित करते हैं। ज्यों-ज्यों हमारा ज्ञान बढ़ता जाता है त्यों-त्यों पता लगता जाता है कि तू कितना-कितना महान् है ! हे महान् ! हे परम महान् !! तेरी महत्ता के आकाश का अन्त हमारा कल्पना-पक्षी अपनी ऊँची उड़ान से भी नहीं पा सकता वह हार मानकर, थक-थकाकर, शांत हो जाता है। तब हम तेरी महत्ता को अनन्त मानकर और तेरी लीला को अगम्य कहकर चुप हो जाते हैं। इतना ही कह सकते हैं कि इस जगत् में जो कुछ पैदा हुआ है, हो रहा है या होगा, उनमें से किसी में भी ऐसी शक्ति नहीं है जो तेरी लीला को समझ सके, जो तेरे द्वारा की जानेवाली या की जा रही लीला के किसी ओर-छोर को पा सके। जो तेरी लीला की अधिक-से-अधिक सच्ची, नजदीकी और पूरी खबर लाता है तो वह यही खबर लाता है कि तेरी लीला अगम्य है, तेरी लीला अगम्य है।

शब्दार्थ–आ= अहो, सच है कि **मघवन्**=हे सवैश्वर्ययुक्त ! **नु ते अनुत्तम्**' **न कि:**= नि:संदेह ऐसी कोई वस्तु नहीं है जोकि तुझसे अप्रेरित है- जो तुझसे प्रेरित नहीं है, **त्वावान् विदान: देवता न अस्ति**= तेरे समान ज्ञानवाला कोई देवता भी नहीं है, **प्रवृद्ध**= हे परम महान् ! **न जायमान: न जात:** = न तो कोई उत्पन्न होनेवाली और न कोई उत्पन्न हुई वस्तु है **{तानि} नशते** = जो तेरे उन कर्मों तक पहुँचती है यानि करिष्या, **कृणुहि**=जिन कर्मों को तू करेगा या कर रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई

ARYA PRATINIDHI SABHA MUMBAI

(सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली से संबद्ध)

ARYA SAMAJ MATUNGA
Shri Dayanand Balak/Balika Vidyalaya,
2nd Floor, 303 Bhimani Street,
Matunga (C.R.), Mumbai - 400019

आर्य समाज माटुंगा
श्री दयानंद बालक/बालिका विद्यालय, 2 रा माला, 303 भिमानी स्ट्रीट,
माटुंगा (म.रे.), मुम्बई - 400019

पं. लेखराम बलिदान दिवस समारोह के अवसर पर
आर्य वैदिक संस्कृति के सजग प्रहरी और क्रांतिकारी वैदिक प्रवक्ता
श्रद्धेय आचार्य श्री आर्यनरेश जी की सेवा में सादर समर्पित

अभिनन्दन-पत्रम्

वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के संलग्न, महर्षि दयानंद के अनन्य भक्त, आर्य जगत के कुशल प्रवक्ता, गुरु के आदर्श शिष्य, कर्मठ व्यक्तित्व, तप, त्याग एवं चरित्र के अद्भुत धनी, सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी प्रवक्ता, वैदिक संस्कृति के सजग प्रहरी श्रद्धेय आचार्य श्री आर्यनरेशजी का स्वाग करते हुए हम सभी आपको गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। आपका जन्म फरवरी 1948 में हुआ, आपने सिविल इंजीनियर की नौकरी त्यागकर महर्षि दयानंद के जीवन से प्रभावित होकर आर्य गुरुकुल कालवा से व्याकरण, महाभाष्य, छन्दशास्त्र, दर्शन आदि की शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने बाद प्रभुभक्ति और देशभक्ति का उद्देश्य ही जीवन का लक्ष्य बना। आपने प्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा, हिमाचल प्रदेश, उप संरक्षक-सार्वदेशिक आर्य वीर दल के पदों को सुशोभित करते हुए, आप गत 42 वर्षों से कश्मीर से कन्याकुमारी तक देश - विदेश के गांवों, स्कूलों, महाविद्यालयों तथा रेडियो, टी.वी. स्टेशनों एवं यू-ट्यूब पर भी क्रांतिकारी वेद प्रवचन व दैनिक पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेखों का विवेचन किया।आर्य जगत में आर्य वीरों और परिवारों के लिए आपने अप्रैल से अक्टूबर प्रति मास निःशुल्क शिविर को लिए उद्गीत साधना स्थली की स्थापना हिमाचल में की। आपने वैदिक सिद्धांत विषयों पर लगभग 50 से अधिक पुस्तके प्रकाशित की एवं गुजरात के भुज, अमरगढ़, माण्डवी, उत्तर प्रदेश, बैंगलोर में अनेक आर्य समाजों के प्रेरक, भूकम्प व तुफान पीड़ित भुज, महाराष्ट्र व उत्तराखण्ड में सेवा कार्य और गरीब बच्चों की शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति योजना जैसे अनेको समाजोपयोगी कार्य आपने किये हैं।

वैदिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए आप वेद विज्ञान को सिद्ध करने हेतु यजुर्वेद के मंत्रों से यज्ञ द्वारा अम्लीय वर्षा का निराकरण, पी.एच.डी गाईड सफल परीक्षण, गोवा के ईसाईमय वातावरण में वेद को प्रचार और वहां वेद मंदिर और आर्य समाज की स्थापना के लिए प्रयासरत हैं। मानवता का भाव ध्यान रखते हुए आचार्य जी ने मानव को सच्चा मनुष्य बनाने व आर्यों को सचेत करने हेतु पाँच दिव्य सूत्रों का ज्ञान जैसे ओम का ध्यान, वेद का ज्ञान, यज्ञ का अनुष्ठान, गोभक्त संस्कारी संतान, राष्ट्रहित बलिदान आदि समाज को दिया। भारत को आर्य श्रेष्ठ राष्ट्र बनाने हेतु स्व. श्री अब्दुल कलाम सहित ती राष्ट्रपति महानुभावों व प्रधानमंत्री श्री मोदी जी और मारिशस के राष्ट्रपति से वार्तालाप व भूतपूर्व राष्ट्रपति श्री के.आर. नारायणनजी को हिन्दी पढ़ने की प्रेरणा श्री आचार्य जी ने दी। अब लगभग 70 वर्ष की आयु में भी देशभक्तों व ऋषिभक्तों के सहयोग से पूरे देश भर में आपकी वेद प्रचार यात्रा चल रही है। वैदिक धर्म प्रचार के आदर्श आपकी यह सराहनीय चर्चा आर्य जगत के लिए गौरवमय है। आपके ये वैदिक कार्य असंख्य कार्यकर्ताओं को वैदिक धर्म की सेवा करने की प्रेरणा दे रहे हैं। आपकी सेवा की विविधता एवं बहुलता के प्रति हम सब कृतज्ञ हैं, जिसे ज्ञापित करने के लिए हम आपका अभिनन्दन करते हुए आपको ''आर्य वैदिक विद्वान गौर सम्मान'' अर्पित करते हुए हम अपने को अत्यंत हर्षित महसूस कर रहे हैं। हम परमपिता परमेश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु हेतु प्रार्थना करते हैं।

❖ हम हैं आपके प्रति श्रद्धावनत् ❖

मिठाईलाल सिंह
प्रधान

देशबंधू शर्मा
उपप्रधान

वेद प्रकाश गर्ग
उपप्रधान

महेशभाई वेलानी
उपप्रधान

अरुण अबरोल
महामंत्री

राजकुमार भगवतीप्रसाद गुप्त
कोषाध्यक्ष

खेमकर्ण वर्मा
पुस्तकाध्यक्ष

स्थान :
वाशी, नई मुम्बई,
दि. 04.03.2018

एवम् आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के सभी पदाधिकारी एवं सदस्य
एवम् मुम्बई नगर एवं उपनगरों के सभी आर्य समाजों के पदाधिकारी एवं सदस्य

सदस्यता आवेदन - पत्र

(नाम, पता तथा पिन कोड, फोन नम्बर, निम्न फार्म में साफ - साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।)

नाम .... उम्र .... दिनांक ....

पता ....

शहर .... राज्य .... पिन ....

फोन .... मोबाइल ....

चैक / मनीऑर्डर/डी.डी. नम्बर .... रुपये ....

ड्राफ्ट/चैक / मनीऑर्डर ''**वैदिक राष्ट्र**'' के नाम से '**वैदिक राष्ट्र**' कार्यालय - 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016 अथवा बैंक ऑफ महाराष्ट्र - शाखा: कनाड़िया रोड़, इन्दौर में सीधे खाता क्रं. 6003657384, IFSC Code: MAH0001396 में जमा कराएं।

पीर का मतलब
क्यों पूजें पीर ?

आपने भी हरी चादर लेकर घूमते कुछ दाढी वालों को देखा होगा या बहुत लोग पीर की पूजा करने जाते हैं। आखिर क्या है पीर ?

मुस्लिम राजा का यह एक अधिकारी होता था, जिसे पीर कहा जाता था। जिसकी नौ गज के घेरे तक सुरक्षा रहती थी, जैसे आजकल सुरक्षा कमांडो मुख्यमंत्री को घेरा बनाकर चलते हैं। गावों में लगान आदि इकट्ठा करने का जिम्मा पीर का होता था! रैवेन्यु गांव के एक निश्चित स्थान पर सभी लोग उस पीर के पास जाकर मुगलों का टैक्स देते थे! वो टैक्स केवल हिंदूओं पर ही था जिसको जजिया कर भी कहते थे!

जो हिन्दू परिवार वह जजिया कर देने से मना कर देता था, तो उस पीर के साथ नौ गज के घेरे में रहने वाले सुरक्षा कर्मी, गांव में सबके सामने उस जजिया कर न चुकाने वाले परिवार की सबसे सुंदर बहु या बेटी को नंगा करके लाते थे, व सबके सामने उसके साथ बलात्कार किया जाता था, ताकि किसी की हिम्मत ना पड़े बाद में जजिया कर देने से मना करने से! सबके सामने हो रहे इस घिनौने बलात्कार के समय कुछ लोग उस बहु बेटी के उपर चादर डाल देते थे, व गांव के बाकी लोग डर के मारे लगान व जजिया कर (पैसा) उसी चादर के उपर या उसके पास धड़ाधड़ डालते चले जाते थे!

और हाथ जोड़ लेते थे सिर झुकाते थे कि कहीं उनके उपर भी पीर या उसके नौ गज के घेरे वाले सुरक्षा देने वाले मुल्ले कोई अत्याचार ना करें!

यह है उन पीरों की सच्चाई, जब वह दुष्ट नीच पीर मरे थे तब भी मूर्ख अज्ञानी हिंदुओ में उनके प्रति वही घबराहट व भयंकर खौफ बना रहा, और फिर यह पीढी दर पीढी परम्परा लोगों के दिमाग में बैठ गई। ऐसे राक्षस पीरों के मरने के सदियों बाद भी मूर्ख हिंदू डर के मारे उनकी कब्रों पर वही चादर व पैसा चढ़ाता है!

अर्थात् जिस जिस नीच पीर ने मूर्ख हिंदुओं की बहिन बेटियों की इज्जत लूटी, यह मूर्ख उनकी ही कब्रों (पीरो) पर माथा रगड़ता फिरता है ! कहीं नौकरी मांगता फिरता है तो कहीं पुत्र और धन दौलत व व्यापार या तरक्की के लिए माथा रगड़ता है।

क्या इससे अधिक कायरता व मूर्खता की मिसाल दुनियां में कहीं मिल सकती है!

प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बलराज मधोक के पिता श्री जगन्नाथ जी का आर्यसमाज विषयक प्रेरणादायक संस्मरण

प्रोफेसर बलराज मधोक के पिता का नाम श्री जगन्नाथ था। आप क्षत्रिय वर्ण के थे। आप आर्यसमाज, हजूरीबाग, श्रीनगर, कश्मीर के मंत्री रहे। देश की आजादी से पूर्व जिन दिनों आप युवा थे, आपने नौकरी के लिए डाकतार विभाग में इंस्पैक्टर के पद पर नियुक्ति के लिए आवेदन किया था। इस पद की लिखित परीक्षा में आप सफल हो गये थे और अब एक साक्षात्कार के बाद सफल होने पर आपको यह पद मिलना था। आपको साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। आपका साक्षात्कार एक अंग्रेज अधिकारी ने लिया। साक्षात्कार में उसने आप से पूछा कि आप किस महापुरूष और ग्रन्थ को अपना आदर्श मानते हैं और आपकी विचारधारा क्या है? श्री जगन्नाथ जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मैं ऋषि दयानन्द जी और उनके ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को मानता हूं और मेरी विचारधारा आर्यसमाजी है।

आपका यह उत्तर सुनकर अंग्रेज अधिकारी ने सर्वथा योग्य होते हुए भी आपका चयन नहीं किया। कारण आपको अंग्रेज अधिकारी के व्यवहार से ज्ञात हो चुका था। यह कारण आपका ऋषि दयानन्द का अनुयायी होना और सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना था। कारण का ज्ञान होने पर श्री जगन्नाथ जी ने निर्णय किया कि उन्हें जीवन में सरकारी नौकरी नहीं करनी है। यह संस्मरण श्री बलराज मधोक ने अपनी आत्मकथा में दिया है। आर्यों ने देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए अनगिनत बलिदान दिए। यह इतिहासिक सत्य है।

हम आशा करते हैं कि आर्यसमाज के लिए अपना जीवन दांव पर लगाने वाले श्री जगन्नाथ जी को आर्यसमाजी बन्धु सादर श्रद्धापूर्वक स्मरण करेगें और इस प्रभावपूर्ण घटना का प्रचार करेंगे। (धन्य है देव दयानन्द जिनके बताये मार्ग पर चलने के लिए सच्चे आया सदा तत्पर रहते है।)

मनमोहन कुमार आर्य

क्या खूब लिखा है

आहिस्ता चल जिंदगी,अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है

कुछ रिश्ते बनकर, टूट गए
कुछ जुड़ते–जुड़ते छूट गए
उन टूटे–छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है

रफ्तार में तेरे चलने से
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए
रूठों को मनाना बाकी है
रोतों को हँसाना बाकी है

कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं
कुछ काम भी और जरूरी हैं
जीवन की उलझ पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के अमूल्य उपदेश

भाग 1

१. जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण कर्म स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

२. जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ सुख के लिए दे रखे हैं उसके गुण भूल जाना ईश्वर ही को न मानना कृतघ्नता और मूर्खता है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

३. जैसे कोई अनन्त आकाश को कहे कि गर्भ में आया या मूठी में धर लिया ऐसा कहना कभी सच नहीं हो सकता क्योंकि आकाश अनन्त और सब में व्यापक है। इससे न आकाश बाहर आता और न भीतर जाता वैसे ही अनन्तर सर्वव्यापक परमात्मा के होने से उसका आना कभी नहीं सिद्ध हो सकता। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

४. जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है उसको वैसा ही वर्तमान करना चाहिए अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करे उसके लिए जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त प्रार्थना करनी योग्य है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

५. दिन और रात्रि के सन्धि में अर्थात् सूर्योदय और अस्त समय में परमेश्वर का ध्यान और अग्निहोत्र अवश्य करना चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ४)

६. जब तक इस होम का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त्त देश रोगों से रहित और सुखों से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाये। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

७. इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

८. 'जो इच्छा, द्वेष, सुख, दुःख और ज्ञानादि गुणयुक्त अल्पज्ञ नित्य है उसी को "जीव" मानता हूँ।' (सत्यार्थ.–स्वमन्त.)

९. क्या पाषाणादि मूर्तिपूजा से परमेश्वर को ध्यान में कभी लाया जा सकता है? नहीं नहीं, मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिर कर चकनाचूर हो जाता है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

१०. जैसे "शक्कर–शक्कर" कहने से मुख मीठा नहीं होता वैसे सत्यभाषणादि कर्म किये बिना "राम–राम" कहने से कुछ भी नहीं होगा। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

भाग 2

११. चारों वेदों में ऐसा कहीं नहीं लिखा जिससे अनेक ईश्वर सिद्ध हों किन्तु यह तो लिखा है कि ईश्वर एक है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

१२. जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

१३. वेद परमेश्वरोक्त है इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद, अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है हम मानते हैं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

१४. जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके इसलिए वेद परमेश्वरोक्त है इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

१५. जो बाहर भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषणादि आचरण करना है वह जहां कहीं करेगा आचरण और धर्म भ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त्त में रह कर दुष्टाचार करेगा वही धर्म और आचार भ्रष्ट कहलायेगा। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

१६. कलियुग नाम काल है, काल निष्क्रिय होने से कुछ धर्माधर्म के काज में साधक बाधक नहीं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

१७. आपस की फूट से कौरव पाण्डव और यादव का सत्यानाश हो गया। परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह भयंकर राक्षस कभी छूटेगा या आर्यों को सब सुखों से छुड़ा कर दुःख सागर में डुबा मारेगा? (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

१८. पारस मणि पत्थर सुना जाता है, वह बात झूठी है। परन्तु आर्यावर्त्त देश ही सच्चा पारस मणि है कि जिसको लोह रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

१६. जब लोग वर्तमान और भविष्यत् में उन्नतशील नहीं होते तब लोग आर्यावर्त्त और अन्य देशस्य मनुष्यों की बुद्धि नहीं होती। जब बुद्धि के कारण वेदादि सत्य शास्त्रों का पठनपाठन, ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश होते हैं तभी देशोन्नति होती है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ७)

२०. जो ब्राह्मणादि उत्तम करते हैं वे ही ब्राह्मणादि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और तो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ४)

भाग 2

२१. जो दुष्ट कर्मचारी द्विज को श्रेष्ठ, कर्मकार शूद्र को नीच मानें तो इसके परे पक्षपात् अन्याय, अधर्म दूसरा अधिक क्या होगा।

२२. जो विद्यादि सद्गुणों में गुरुत्व नहीं है झूठमूठ कण्ठी, तिलक, वेद विरुद्ध मन्त्रोपदेश करने वाले हैं वे गुरु ही नहीं किन्तु गड़रिये हैं। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

२३. "जो धर्मयुक्त उत्तम काम करे, सदा परोपकार में प्रवृत्त हो, कोई दुर्गुण जिसमें न हो, विद्वान् सत्योपदेश से सब का उपकार करे, उसको साधु कहते हैं।" (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

२४. जैसे गृहस्थ व्यवहार और स्वार्थ में परिश्रम करते हैं उनसे अधिक परिश्रम परोपकार करने में संन्यासी भी तत्पर रहें तभी सब आश्रम उन्नति पर रहें। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

२५. संन्यासियों का मुख्य कर्म यही है कि सब गृहस्थादि आश्रमों को सब प्रकार के व्यवहारों का सत्य निश्चय करा अधर्म व्यवहारों से छुड़ा सब संशयों का छेदन कर सत्य धर्मयुक्त व्यवहारों में प्रवृत्त करें। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ५)

२६. उत्तम दाता उसको कहते हैं जो देश, काल को जान कर सत्य विद्या धर्म की उन्नति रूप परोपकारार्थ देवे। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ११)

२७. जिसके शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास २)

२८. अनेक प्रकार के मद्य, गांजा, भांग, अफीम आदि– जो–जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं उनका सेवन कभी न करें। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

२९. देखो जब आर्यों का राज्य था तब महोपकारक गाय आदि नहीं मारे जाते थे, तभी आर्यावर्त्त व अन्य भूगोल देशों में बड़े आनन्द में मनुष्यादि प्राणी वर्त्तते थे क्योंकि दूध, घी, बैल आदि पशुओं की बहुताई होने से अन्न रस पुष्कल होते थे। (सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

३०. इन पशुओं के मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा।

(सत्यार्थप्रकाश समुल्लास १०)

।। ओ३म् ।।

"नास्तिक, ईश्वर के सत्यस्वरुप से अनभिज्ञ, मिथ्या कर्मकाण्ड व उपासना करने वाले मनुष्यों का परलोक वा भविष्य असुखद"

हम आंखों से जितना व जैसा संसार देखते हैं वह सब और जो नहीं देख पाते वह सब भी सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान परमेश्वर की रचना है। उसी परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को उत्पन्न कर उनके द्वारा ईश्वर, जीवात्मा और सृष्टि का यथार्थ व सत्य ज्ञान दिया था जिससे मनुष्य अज्ञान व अन्धविश्वासों में न भटके। महाभारत काल तक वेदों का यथार्थ ज्ञान देश भर में उपलब्ध था। इसके बाद अव्यवस्था उत्पन्न होने व विद्वानों की कमी व उनके आलस्य प्रमाद और पुरुषार्थरहित जीवन के कारण धीरे–धीरे वैदिक ज्ञान विलुप्त होता रहा। ईश्वर की कृपा व ऋषि दयानन्द (1825–1883) के पुरुषार्थ से ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पुनः वेदों का प्रकाश–प्रचार हुआ। आज भी ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित उनके ऋग्वेद भाष्य (आंशिक) व यजुर्वेद भाष्य से सत्य विद्याओं का प्रकाश हो रहा है। वेदों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस संसार को बनाने, चलाने व पालन करने वाली एक सत्ता है जिसे ईश्वर कहा जाता है। ईश्वर ने यह संसार जीवों वा जीवात्माओं के लिए बनाया है। जीव एक चेतन सत्ता है। यह जीव अत्यन्त सूक्ष्म, एकदेशी, अल्पज्ञ, अल्प शक्ति वाला, अनादि, अनुत्पन्न, अविनाशी और अमर सत्ता है। सृष्टि प्रवाह से अनादि है। ईश्वर ने संसार में विद्यमान असंख्य वा अनन्त जीवों को उनके पूर्व कृत कर्मों के अनुसार सुख व दुःख प्रदान करने के लिए ही यह सृष्टि बनाई है।

हम देखते हैं कि जिस मनुष्य में जितना ज्ञान व सामर्थ्य होती है, वह उसके अनुरूप कर्म करता है। कोई मनुष्य निकम्मा या खाली रहना नहीं चाहता। वेदों में शिक्षा है कि मनुष्य कर्म को करते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। बिना कर्म किये मनुष्य जीवित नहीं रह सकता। बतातें हैं कि पलकों का खुलना या बन्द होना अर्थात् आंखों की पलकों का झपकना आदि क्रियायें भी आत्मा के संकल्प के कारण ही होती हैं। मनुष्य शरीर में प्राण जन्म से मृत्यु पर्यन्त चलते ही रहते हैं। सद्कर्मों वा पुरुषार्थ से ही मनुष्य को सुख व शान्ति मिलती है। मनुष्य जब रोगी हो जाता है तो वह काम करने में असमर्थ होता है। उस समय उसकी यही भावना होती है कि वह जल्दी से जल्दी स्वस्थ हो जाये और अपने ज्ञान व शक्ति के अनुसार कर्म व पुरुषार्थ कर सुखी हो। ईश्वर भी एक चेतन सत्ता है। वह सर्वज्ञ है और सर्वशक्तिमान है। ईश्वर को अनादि काल से सृष्टि उत्पत्ति, पालन व प्रलय करने का ज्ञान व अनुभव है। इसी कारण वह सृष्टि की रचना व पालन करता है। सभी जीवात्मायें उसकी सन्तानों के समान है। अतः उसका कर्तव्य है कि जीवात्माओं को सुख प्रदान करने के लिए वह सभी कार्य करें जो कि माता–पिता को अपनी सन्तानों के प्रति करने आवश्यक व उचित होते हैं। यह ईश्वर द्वारा सृष्टि की रचना करने के साधारण कारण व तर्क हैं।

परमात्मा ने मनुष्य को बनाया वा जन्म दिया है। वेदों का ज्ञान भी उसने मनुष्य को अपने कर्तव्यों का मार्गदर्शन कराने के लिए दिया है। अतः मनुष्यों को अपने मन व बुद्धि से वेदों का अध्ययन कर उसका मनन करते हुए वेद द्वारा बताये गये सभी के लिए हितकारी कर्तव्यों का आचरण व पालन करना चाहिये। मनुष्य का पहला कर्तव्य है कि वह ईश्वर व जीवात्मा सहित इस सृष्टि के सत्यस्वरूप को जाने। यह ज्ञान उसे वेदों से ही प्राप्त होता है। अन्य सभी ग्रन्थ न्यूनाधिक भ्रान्तियों से युक्त है। मनुष्य अल्पज्ञ होता है अतः उसकी रचनायें भी अल्प ज्ञान वाली सत्यासत्य मिश्रित ही होती हैं। मनुष्य के ग्रन्थों से मनुष्य सत्य व यथार्थ निर्भान्त ज्ञान को प्राप्त नहीं हो सकता। वेदों से इतर संसार में जितने भी ग्रन्थ हैं वह सभी मनुष्य वा मनुष्यों के द्वारा रचित व उपदेशित हैं। अतः उन सभी में अज्ञान व भ्रान्तियां हैं व उनका होना सम्भव है। वेदाध्ययन से ही उन भ्रान्तियुक्त कथनों का ज्ञान होता है। ऋषि दयानन्द ने वेदों का अध्ययन कर वेदज्ञान को सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के प्रथम 10 समुल्लासों में प्रस्तुत किया है। शेष चार समुल्लासों वा अध्यायों में उन्होंने संसार के प्रमुख मत–मतान्तरों की मिथ्या व सृष्टि क्रम के विरुद्ध भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली मान्यताओं व विचारों की समीक्षा वा खण्डन किया है। सत्यार्थप्रकाश संसार का एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसे पढ़कर मनुष्य सत्य व असत्य के स्वरूप को जान व समझ सकता है। सत्य का ग्रहण कर असत्य का त्याग कर मानव कर्तव्य वा धर्म का पालन कर सकता है। सत्यार्थप्रकाश के बाद उपनिषद, दर्शन, मनुस्मृति व वेदभाष्य आदि पढ़कर अपने ज्ञान को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। जिन लोगों ने सत्यार्थप्रकाश को पढ़ा है वह सभी आश्वस्त हैं कि उन्हें ईश्वर, जीव व प्रकृति विषयक संसार के सभी मनुष्यकृत ग्रन्थों में उपलब्ध ज्ञान की तुलना में कहीं अधिक मानव जीवन का उत्थान करने वाला सत्य व यथार्थ ज्ञान प्राप्त है। अतः संसार के सभी मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह जीवन में एक जिज्ञासु बनकर सत्यार्थप्रकाश एवं ऋषि दयानन्द जी के वेद भाष्य सहित उपनिषदों, दर्शनों व मनुस्मृति आदि ऋषि ग्रन्थों का अवश्य अध्ययन करें।

मनुष्य का कर्तव्य ईश्वर, जीव व प्रकृति के विषय में अधिकाधिक सत्य ज्ञान प्राप्त करना है। आजकल बहुत से शिक्षित लोग ईश्वर व जीवात्मा के सत्य ज्ञान के विषयक में भ्रमित हैं। वह ईश्वर की सत्ता को नहीं मानते। उनसे पूछा जाये कि यह संसार कैसे बना और कौन इसे चला रहा है तो इसका सन्तोषजनक उत्तर उनके पास नहीं होता। ऐसे लोगों को यदि बुद्धि का शत्रु कहा जाये तो अनुचित न होगा। संसार में दो प्रकार के नास्तिक दृष्टि गोचर होते हैं। एक तो वह हैं जो ईश्वर के अस्तित्व वा उसकी सत्ता से इनकार करते हैं। दूसरे वह लोग भी पूर्ण या अर्धनास्तिक हैं जो ईश्वर को कथन मात्र से मानते हैं परन्तु ईश्वर के यथार्थ स्वरूप को न जानते हैं और न जानने का प्रयास ही करते हैं। उनके अपने अपने मत में जो अविद्यायुक्त बातें हैं वह लोग उन्हीं बातों को वह बिना सोचे विचारे बुद्धि की आंखे बन्द करके स्वीकार कर लेते हैं। यह घोर अविद्या का कार्य है। इन मतों के जो आचार्य व प्रणेता होते हैं वह भी सत्य व असत्य के यथार्थ स्वरूप को जानने का प्रयत्न नहीं करते। उनके लिए इतना ही पर्याप्त होता है कि उनके आचार्य व प्रवर्तक ने क्या विचार दिये व उनके मत की पुस्तक में क्या लिखा है। सत्य का अनुसंधान वा विचार न करने के कारण ऐसे लोग ईश्वर – जीवात्मा विषयक सत्य ज्ञान को प्राप्त नहीं

हो सकते। जीवात्मा कर्म करने में स्वतन्त्र है और परमात्मा न्यायकारी है, अतः वह सबको उनके पूर्व कर्मों के अनुसार जीवन जीने के लिए भोग प्रदान कर रहा है। भौतिक सुख प्राप्त होने के कारण मत–मतान्तरों के लोग सन्तुष्ट रहते हैं कि वह ठीक है। यह एक प्रकार से अपनी जमा पूंजी को खर्च करने के समान है। ऐसे मनुष्य भविष्य के लिए नई पूंजी संग्रहीत नहीं कर रहे हैं जिस कारण उनका भविष्य दुःखमय होगा। मत–मतान्तरों के अपने स्वार्थ व संगठन के लोगों द्वारा की जाने वाली हिंसा आदि के डर से भी बहुत से लोग चाह कर भी सत्य को जान लेने पर उसे स्वीकार नहीं कर पाते। यह क्रम कभी समाप्त होगा या नहीं, कहा नहीं जा सकता? इससे होने वाली हानि का मतों के आचार्यों व उनके अनुयायियों को अपनी अविद्या के कारण ज्ञान नहीं है। जिन्हें है भी वह अपने स्वार्थों व अविद्या के कारण उन्हीं में लिप्त हां और अपने विवेक ज्ञान की आंखों को बन्द किये हुए हैं।

वेदों ने हमें कर्मफल का सिद्धान्त दिया है जिसे हमारे ऋषियो व विद्वानों ने अपने ज्ञान व विवेक से विस्तार दिया है। इस सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य जो शुभ व अशुभ अर्थात् अच्छे व बुरे कर्म करता है उसके फल उसे अवश्यमेव भोगने ही होते हैं। मनुष्य का यह जीवन न प्रथम है और न अन्तिम। ऐसे असंख्य जीवनों की यात्रा करता हुए मनुष्य का जीवात्मा इस जन्म में आया है और मृत्यु होने के बाद भी अनन्त काल तक इसी प्रकार से उसकी आत्मा का जन्म–मरण अर्थात् पुनर्जन्म होता रहेगा। ईश्वर ने हमें मनुष्य जीवन ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति आदि को यथार्थरूप में जानने और सत्य ज्ञानपूर्वक ईश्वर की उपासना करके अपनी आत्मा की उन्नति करने के लिए दिया है। यदि हम ऐसा करते हैं तो हमारी आत्मा की उन्नति होने के साथ हमारा परलोक वा पुर्नजन्मों का सुधार होता है। यदि हम मनुष्य जीवन के उद्देश्य ईश्वर व जीव आदि के यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करने में आलस्य प्रमाद व पुरुषार्थ की उपेक्षा करेंगे तथा ईश्वर व जीव के यथार्थ स्वरूप व इनके गुण कर्म स्वभाव को नहीं जानेंगे तो हम आत्मोन्नति से तो वंचित होंगे ही, मनुष्य जन्म के उद्देश्य को भुलाकर अज्ञानपूर्वक केवल इन्द्रिय सुख व मिथ्या कर्मों व आचरणों में लगे रहने के कारण ईश्वर से दण्डित भी होंगे। कर्मफल सिद्धान्त के अनुसार यह प्रायः निश्चित है कि नास्तिक लोगों को मनुष्य का पुनर्जन्म मिलना कठिन वा असम्भव है। इसका कारण यह लगता है कि ईश्वर ने हमें जिस उद्देश्य से जन्म दिया हमने उसे जानने का प्रयत्न ही नहीं किया और न ही उसके लिए पुरुषार्थ किया। ऐसे नास्तिक व अज्ञानी मनुष्यों को ईश्वर पुनः मनुष्य बनने का अवसर नहीं देगा। इसलिये कि नास्तिक व अन्धविश्वासी मनुष्यों ने ईश्वर की वेद में की गई मनुष्य के हित की आज्ञा व प्रेरणा की अवहेलना की है। नास्तिक होना या मिथ्या पूजा उपासना आदि करना किसी भी मनुष्य के लिए उचित नहीं है। अतः सभी मनुष्यों को अपने ही हित में और अपने परलोक व भविष्य के सुखों को देखते हुए सत्यार्थप्रकाश और वेदभाष्य आदि पढ़कर अपने यथार्थ कर्तव्यों को निर्धारित करना चाहिये। ईश्वर के सत्य स्वरूप को जानकर उसे प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिये। यदि ऐसा करेंगे तो इसमें हमारा ही हित व लाभ है। इससे संसार में सुख व शान्ति का विस्तार भी हो सकता है। ओ३म् शम्।

–मनमोहन कुमार आर्य

आज हमारे समाज व राष्ट्र को देश भक्त चरित्रवान आदर्श युवकों की बहुत बड़ी फौज चाहिए।

रामेश्वर पटेल

(पूर्व मंत्री, मध्यप्रदेश व प्रज्ञा गर्ल्स हाई स्कूल एवं विद्यासागर स्कूल चैयरमेन, इन्दौर)

इन्दौर। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रसिद्ध श्री रामेश्वर पटेल (पूर्व मंत्री, मध्यप्रदेश व प्रज्ञा गर्ल्स हाई स्कूल एवं विद्यासागर स्कूल चैयरमेन, इन्दौर) ने कहा कि आज हमारे समाज व राष्ट्र को देश भक्त चरित्रवान आदर्श युवकों की बहुत बड़ी फौज चाहिए आज इन युवकों ने आत्मरक्षार्थ व्यायाम, अस्त्र-शस्त्र प्रदर्शनों व आसानों के अद्भूत प्रदर्शन ने यह सिद्ध कर दिया है कि जो नैतिक-आध्यात्मिक-चारित्रिक एवं देश भक्ति की शिक्षा जो स्कूल-कॉलेजों में नहीं दे पा रहे है। वह इन आर्य युवक शिविरों के माध्यम से दी जा रही है जिससे इनका महत्व आज और भी अधिक बढ़ गया है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास ही जीवन का सफलता है अर्थात शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक उन्नति करना। आर्य युवक आवासीय शिविरों में युवकों को सर्वांगीण विकास के लिये शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे युवकों का निर्माण होता है, युवकों का निर्माण ही राष्ट्र निर्माण है। उपरोक्त विचार श्री महेन्द्र भाई (राष्ट्रीय महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली) ने आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास आवासीय सप्त दिवसीय शिविर के अवसर पर प्रज्ञा गर्ल्स हाई स्कूल इन्दौर में व्यक्त किये।

शिविराध्यक्ष व प्राचार्या श्रीमती मंजू नौटियाल (प्रिंसिपल, प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल, इन्दौर) ने कहा कि मैं इन युवकों के प्रदर्शन से प्रभावित हूँ, और आश्वासन देती हूँ की आगामी दिसंबर माह में इसी प्रकार कन्याओं-युवतियों को सुशिक्षित आत्मरक्षार्थ एवं सशक्त बनाने के उद्देश्य से कन्याओं का आवासीय शिविर प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल, इन्दौर में लगायेंगे और उसे पूरी तरह से सफल भी बनायेंगे। श्री राम कुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, के.आ.यु. परिषद् दिल्ली) ने युवकों को हर प्रकार के नशे से दूर रहने का संकल्प दिलाया। योगाचार्य श्री विरेन्द्र शास्त्री (महामंत्री, के.आ.यु. परिषद् हरियाणा) ने कहा कि हम सत्विक भोजन के साथ-साथ प्रकृति से जुड़कर हम अपने आप को हमेशा स्वस्थ रख सकते है।

श्री यशपाल यश (अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, राजस्थान) ने कहा कि स्वस्थ शारीर में ही स्वस्थ मन का वास है मन में उठने वाले विचार सदा सकारात्मक हो यह इन शिविरों के माध्यम से ही प्राप्त है।

आचार्य प्रभा मित्र (अंतर्राष्ट्रीय वैदिक प्रवक्ता) ने बच्चों संकल्प दिया कि हम शुद्ध शाकाहारी भोजन करेंगे अंडा, मास, मछली आदि छोड़ने का व्रत दिलाया।

डॉ. सुनील आर्य, दिल्ली (पंचगव्य विशेषज्ञ) पंचगव्य की विशेषता बताते हुये कहा कि गौमूत्र, गौछाछ, गौदुग्ध, गौदही, गोबर आदि के द्वारा असाध्य दूर करने के उपाये बताये।

आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोंपदेशक पं. हरिओम सरल ने महापुरुषों के जीवन गाथा को संगीतमय गा कर बच्चों में देश भक्ति की भावना का प्रचार-प्रसार किया। मुख्य रुप से प्रशिक्षकों में सर्व श्री तात्याराव शास्त्री (मुंबई), श्री रवि आर्य (हरियाणा), श्री शिवराज शास्त्री (होशांगाबाद) श्री प्रणवीर शास्त्री (उत्तरप्रदेश) श्री कृपाल सिंह उज्जैन, अविनाश शास्त्री (इन्दौर), श्री पवन शास्त्री, श्री पवन शास्त्री, भोपाल आदि थे।

समापन के अवसर पर लगभग 150 युवकों ने लाठी, भाला, तलवार, जूड़ों कराटे, लेजियम, चन्द्र नमस्कार, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, अग्निचक्र में से निकलना पीटी, परेड आदि का भव्य प्रदर्शन किया। श्री प्रणवीर शास्त्री ने गले से सरिया मोड़ना, हाथ से पीतल की थाल फाड़ना, हाथ से जंजीर तोड़ना, हाथ से काँच पीसना आदि का प्रदर्शन प्राणायाम की शक्ति के द्वारा किया।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.) ने कहा कि इन आर्य युवक शिविरों के माध्यम से युवकों में स्वालंबन, नियमित दिनचर्या, आध्यात्मिक उन्नति का पाठ पढ़ाया जा रहा है। जिससे हमारे राष्ट्र का भविष्य उज्ज्वल है। आभार व धन्यवाद व्यक्त करते हुये कहा कि इस शिविर में जिन-जिन महानुभावों का सहयोग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रुप में मिला उनका आभारी हूँ।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

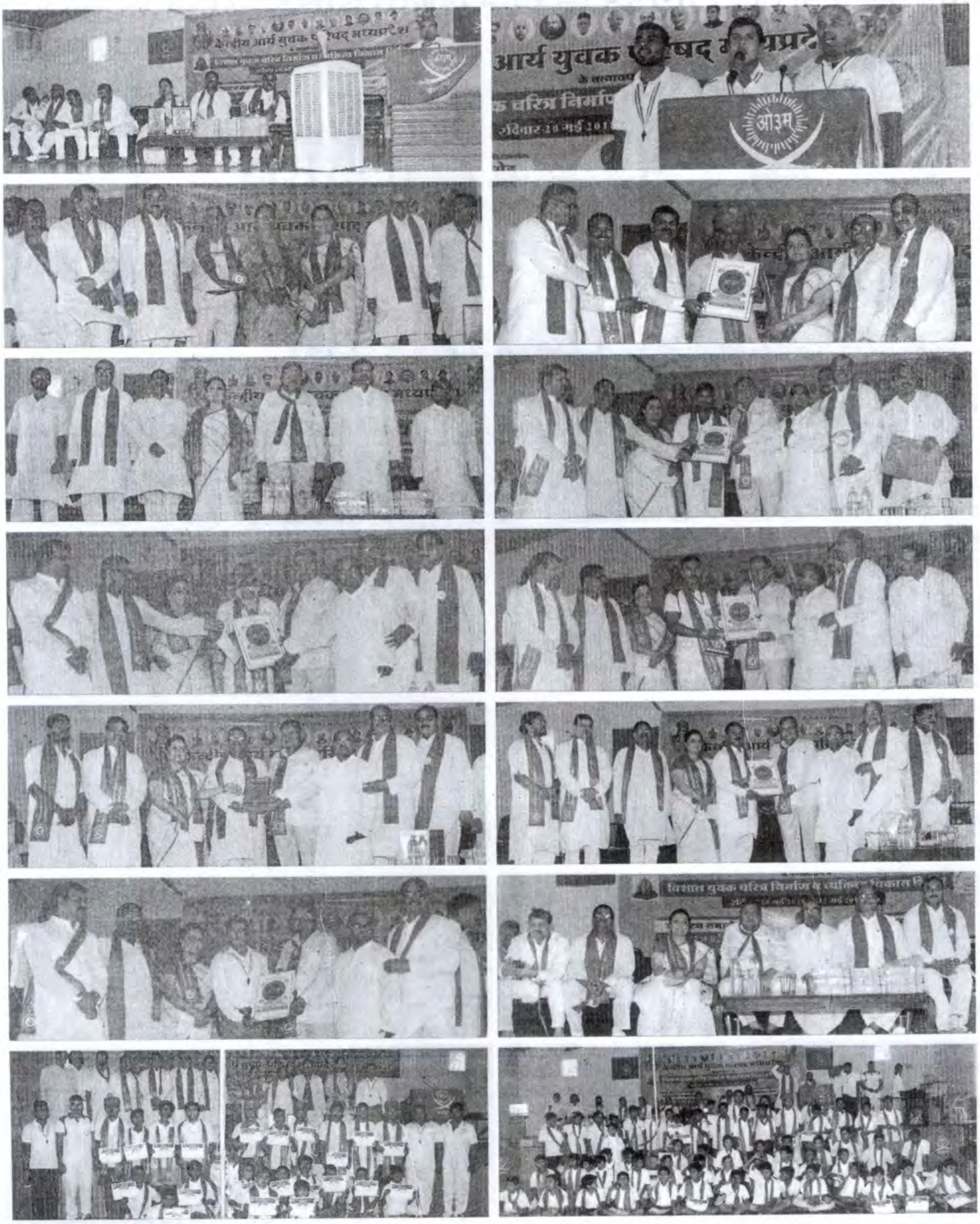

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

ओ३म्

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेल

दिनांक – 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन-मन-धन से सहयोग करें।

निवेदक

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

अध्यक्ष, गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर, अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद् म.प्र., संपादक– वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका

आयोजक एवं संयोजक - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

'महर्षि दयानंद भवन' 3/5 आसफ अली रोड़, नई दिल्ली – 110002

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

---

।। ओ३म्।।

गुरु विरजानंद गुरुकुल

वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग के प्रचार – प्रसार हेतु

गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर (म.प्र.)

के सहयोगार्थ तन–मन धन से सहयोग करके पुण्य के भागी बनें।

नोट:- गुरुकुल में पुस्तक, वस्त्र एवं भोजन आदि सामग्री देने हेतु एवं मासिक सदस्य-वार्षिक सदस्य बनने हेतु संपर्क करें।

संपर्क करें :

कार्यालय : आर्य समाज – 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.vedicparinaya.com

www.indorearyasamaj.com www.aryasamj.co ✆ 9977 95 7777, 9977 98 7777 ☎ 0731-6066067

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र. के तत्वावधान में आयोजित विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा

101 लोगों का सम्मान हुआ एवं

"बरनाली, अभ्युदय, काव्यमाला, अरूणोदय, बालदीप, पितृयान से देवयान, भाव तरंगिणी, कुमुद की कलम से एवं मेरे साथ–साथ चल" सहित कई पुस्तकों का विमोचन हुआ ।

इन्दौर। साहित्य संगम संस्थान इंदौर में आयोजित सम्मान समारोह में 101 लोगों का सम्मान हुआ एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश के भिन्न–भिन्न स्थानों से आये साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया ।

श्रीमती मीना भट्ट (अध्यक्ष, लोकायुक्त, जबलपुर एवं पूर्व न्यायाधीश, जबलपुर) ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कहा कि साहित्य संगम संस्थान विभन्न प्रांतों में साहित्यिक सेवा के माध्यम से समाज एवं राष्ट्र चेतना का कार्य कर रहा है। मुख्य अतिथि पं. योगेन्द्र महंत (राज्यमंत्री, मध्यप्रदेश सरकार) ने मां अहिल्या देवी की नगरी में पधारे हुये सभी साहित्यकारों का प्रतीक चिन्ह, सम्मान–पत्र एवं दुपट्टे के द्वारा स्वागत किया । इस अवसर पर साहित्य संगम संस्थान के द्वारा विशिष्ट सम्मान के साथ–साथ सम्मान राशि श्री सतीश चन्द्र शर्मा डॉ. आनंद प्रकाश शाक्य डॉ. शशी श्रीवास्तव, श्रीमती अंकिता जैन, श्री श्याम मोहन नामदेव, श्रीमती शकुंतला अग्रवाल, सुश्री सौम्या मिश्रा, श्री आशीष पाण्डेय एवं श्री राजेश पुरोहित को विशिष्ठ सम्मान से सम्मानित किया गया । आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (संरक्षक, साहित्य संगम संस्थान) कहा कि इस साहित्य संगम सम्मान समारोह 2018 में दिल्ली, जयपुर, अहमदाबाद, जबलपुर, मुंबई, गुहाटी, वाराणसी, नासिक, पुणे, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उतरप्रदेश, उतराखण्ड, बिहार, झारखण्ड उड़ीसा कई प्रांतों से आये साहित्यकारों ने अपनी–अपनी रचनाओं के माध्यम से विचार व्यक्त किये। ऐसा दृश्य देख कर हमें लघु भारत का दर्शन हो गया।

श्रीमती गायत्री सोलंकी ने बताया कि इस सम्मान समारोह में श्री अनिल अयान, श्रीमती सुवर्णा जाधव श्रीमती रति ओझा व्यथा, श्री छगन लाल गर्ग, श्रीमती देवयानी नायक, श्रीमती मनीषा जोबन देसाई, श्रीमती शकुंतला शेंडे 'शकुन', डॉ. प्रभांशु कुमार, श्री दिग्विजय शर्मा, श्रीमती राजेश कुमारी राज, श्री प्रदीप कुमार दाश, श्रीमती अलका अग्रवाल, श्रीमती नीता चौबीसा, श्री गुलाबचंद पटेल, डॉ. मीनू पाण्डेय, श्री पंकज प्रखर, श्रीमती शशि श्रीवास्तव, श्री विक्रम प्रसाद गौड़, श्रीमती प्रतिभा रामकृष्ण श्रीवास्तव, श्री सूर्यकांत गुप्ता, श्री सतीश चन्द्र शर्मा सुधांशु, श्रीमती रवि रश्मि अनुभूति, श्री ईश्वर दयाल गोस्वामी, श्री अनंत राम चौबे, श्रीमती इंदु पराशर, श्रीमती उषा शिवहरे नीरान्जना, श्रीमती महालक्ष्मी सक्सेना, श्रीमती अंकिता जैन, श्री विनोद दुबे, श्री आर.के. यादव, श्री रुपेश कुमार, श्री सुनील कुमार अवधिया, श्री विनोद निराश, श्री सुरेश तन्मय, श्री दिग्विजय सिंह, श्रीमती सुनीता लुल्ला, श्रीमती कुमुद श्रीवास्तव, श्रीमती दीपा संजय दीप, श्रीमती किरण लता वैद्य, डॉ. आनंद प्रकाश शाक्य, डॉ. ब्रजेन्द्र नारायण शैलेश, श्री सुधांशु यादव साहिल, श्री श्याम मोहन नामदेव, डॉ. अखिलेश शर्मा, श्री हरि प्रकाश गुप्ता, श्रीमती शकुंतला अग्रवाल 'शकुन', श्रीमती सुनीता विश्नोलिया, डॉ. सुशिला सिंह आदि 101 साहित्यकारों का सम्मान होगा। इस सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश के अलावा गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, उत्तराखण्ड, बिहार, आसम, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, आंध्रप्रदेश आदि प्रदेशों के साहित्यकारों का ऐतिहासिक सम्मान **साहित्य संगम संस्थान के संतोष सभागृह रानी सती गेट, इन्दौर** में आयोजित किया गया।

इस सम्मान समारोह के **संयोजक आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार** एवं **डॉ. अरुण श्रीवास्तव जी** ने बताया कि गत ३१ दिसंबर २०१७ को भी साहित्य संगम संस्थान ने देश की लगभग चालीस प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्थाओं और लगभग साठ साहित्यकारों को सम्मानित किया था । साहित्य संगम संस्थान के पंजीकृत प्रकाशन विभाग में अनेक एकल और साझा पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं । जिनका विमोचन भी इस शुभ अवसर पर किया गया। **'बरनाली'** साहित्य संगम संस्थान की नारी मंच संगम सुवास की बहनों द्वारा एक साझा अनूठा उपन्यास लिखा गया है । **'अरुणोदय'** साहित्य संगम शिरोमणि डॉ. अरुण श्रीवस्तव अर्णव जी द्वारा रचित एक काव्यकृति है, **'बालदीप'** साहित्य संगम संस्थान की सम्मानित सदस्या श्री दीपा संजय दीप की बाल साहित्य पर एक काव्य कृति है, **'देवयान से पितृयान'** साहित्य संगम संस्थान के अध्यक्ष राज वीर सिंह की काव्य कृति है और किसन लाल अग्रवाल द्वारा लिखी **'मेरे साथ साथ चल'** एक कविता संग्रह, भाव तरंगिणी सौम्या मिश्रा की काव्य कृति **'भाव तरंगिणी'** एवं कुमुद श्रीवास्तव (वर्मा) के द्वारा रचित काव्य संग्रह **'कुमुद की कलम से'** आदि इन पुस्तकों का और संस्थान के प्रकाशन विभाग से सद्य प्रकाशित सभी पुस्तकों का विमोचन इस समारोह में सम्पन्न हुआ।

साहित्य संगम सम्मान समारोह एवं अखिल भारतीय कवि सम्मेलन कार्यकम का सचिव श्री कविराज तरूण 'सक्षम' सुश्री सौम्या मिश्रा एवं आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार ने संचालन किया। अंत में आभार व धन्यवाद डॉ. अरूण कुमार श्रीवास्तव ने व्यक्त किये ।

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकियाँ

श्रम

श्रम ही जीवन की पूँजी है
यह सफलता की कुंजी है ।
सब कुछ तज श्रम करले
जो घबराता वह मूँजी है ।।

श्रम ही भविष्य बनता है
जो शर्म करे वह जाता है ।
श्रम से ही कर्म बँधे सारे
श्रम से मनु सुख पाता है ।।

नियत बना श्रम करने की
झोली अपनी ही भरने की ।
कायर कुछ पाते हैं जग में
उनको तो रहती मरने की ।।

श्रम

हरिहरण घनाक्षरी
शिल्प–८८८८ प्रति
चरण चार चरण समतुकांत,
चरणांत लघु–गुरु

श्रम का साम्राज्य होय
कापुरुष बैठ रोय
रहे न गरीब कोय
श्रम है बड़ा महान ।

भाग्य का विधाता कर्म
जीवन बनाता धर्म
श्रम में न होय शर्म
करें मिल श्रमदान ।।

भविष्य विधाता काज
श्रम से बने सुराज
करें हृदयों पे राज
श्रम का महत्व मान ।।

श्रम करें नर–नार
इसी से बने परिवार
होता सबका उद्धार
श्रम का ही हो सम्मान ।।

राज वीर सिंह "मंत्र"

जीवन परिचय

नाम – राज वीर सिंह "मंत्र"
पिता का नाम – श्री गजराज सिंह
माता का नाम – श्रीमती विद्यावती
जन्म तिथि – १ मार्च १९७६
जन्म स्थान – ग्राम–तरौंदा, पोस्ट–फतेहपुर रोशनाई, जिला–कानपुर देहात (उ.प्र.) पिन–२०६३०४
शैक्षिक – एम.ए., हिंदी
योग्यता – (डॉ. भीमराव अंबेडकर वि.वि., आगरा), बी.एड. (इग्नू), प्रभाकर (म.द.वि.वि. रोहतक) सिद्धांत शास्त्री, सिद्धांताचार्य (श्रीमद्दयानंद स्मारक ट्रस्ट टंकारा, गुजरात) साहित्य रत्न, शिक्षा विशारद (साहित्य सम्मेलन, प्रयाग उ.प्र.) डी.सी.ए. (राष्ट्रीय साक्षरता मिशन, विशाखापत्तनम)।
लेखन – १९९५ से लेखन के क्षेत्र में कार्यरत हैं। विभिन्न प्रतिष्ठित समाचार पत्र–पत्रिकाओं में लेख, गद्य–पद्य का प्रकाशन निरंतर हो रहा हैं। इस समय में देश–भर के अनेक पत्र–पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में (जैसे–हिंदुस्तान, दैनिक जागरण, आर्यावर्त, अक्षर संवाद, स्वदेशास्था, राष्ट्र किंकर, सच के करीब, इंडियन टाइम्स, वनौषधिमाला) साहित्यिक लेखन से जुड़े हैं।
साहित्यिक – अनेक साहित्यिक सम्मान आपको प्राप्त हो चुके हैं। देश के लगभग १००० नवोदित उपलब्धियाँ साहित्यकारों से इलेक्ट्रॉनिक/सोशल मीडिया के माध्यम से जुडे है। लगभग ७७ लोगों को व्हाट्स ऐप समुदाय (जिसमें देश के सरकारी सेवारत उच्चाधिकारी, राजनेता, प्रधानाचार्य, साहित्यकार, शिक्षक, व्यापारी, छात्र, गृहिणियाँ प्रतिदिन नवसृजन करते हैं) का सकुशल संचालन कर रहे हैं। वर्तमान में साहित्य संगम संस्थान (पंजीकृत) के अध्यक्ष के रूप में निरंतर व्हाट्स ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष हैं एवं आपने 'एक पृष्ठ मेरा भी' नामक साझा संकलन में 34 साहित्यकारों की रचनाओं का कुशलतापूर्वक सफल संपादन–प्रकाशन किया हैं।
भाषा ज्ञान – हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी, गुजराती।
अभिरुचियाँ – वैदिक साहित्य से संबंधित अनुसंधानात्मक लेख लिखना–पढ़ना, योग शिविरों का आयोजन, वैदिक–धार्मिक अनुष्ठानों में प्रवचन एवं नवोदित साहित्यकारों को शिक्षण–प्रशिक्षण एवं उन्हें प्रिंट मिडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मिडिया में अधिकाधिक स्थान दिलवाना।
वर्तमान में – डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल गुआ, जिला–पश्चिम सिंहभूम, झारखण्ड में वरिष्ठ अध्यापक (हिन्दी, संस्कृत)। वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका के आप सह–संपादक है।

महिमा श्रम की

श्रम की पूजा जगत में, होती रही अपार ।
वंदनीय सत्कर्म हैं, जिनसे हो भव पार ।।

हर वर्ष की तरह मजदूरों के सम्मान में 1 मई को विश्व मजदूर दिवस मनाया गया बहुत रैलियां निकली, नेता से लेकर अभिनेता तक सभी पूर्ण मनोयोग से अपने फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम में इनकी तारीफ़ में कसीदे गढ़ते देखे गए। अचानक से ऐसा लगने लगा कि इनकी दशा व दिशा बदल ही जाएगी, किसी ने कहा कि हमें इनको नमन कर इनका सम्मान करना होगा तभी एक समाज सेवी ने आगे बढ़कर इस आयोजन में होने वाले खर्च का जिम्मा उठाया तो भला पार्षद महोदय कहाँ पीछे रहते उन्होंने भी जोश में कह दिया मैं क्षेत्र के सांसद महोदय को बुलाऊंगा और इस आयोजन को ऐसे धूम– धाम से करवाऊंगा कि लोग युगों–युगों तक याद करेंगे ।

अब तो इस दिवस को यादगार बनाने हेतु पूरा शहर ही जुट गया, भारी भरकम पंडाल लगाया गया, भोजन व्यवस्था भी अच्छी थी, नाँच गाने का इंतजाम भी मनोरंजन की दृष्टि को ध्यान में रखकर किया गया था । अब समस्या उठी कि केवल मजदूरों के नेता को ही सम्मानित करें या मजदूरों को, ये बातचीत होने लगी, सचिव स्तर के कर्मचारियों ने कहा मजदूर तो सभी हैं किसी न किसी प्रकार से पर होना ये चाहिए कि जो सबसे निचले स्तर पर कार्य कर समाज की सेवा कर रहे हैं उन्हें आज सम्मानित करें, चर्चा में शामिल नेता जी के प्रतिनिधि भड़क गए कहने लगे मुझे तो अपने साहब से बड़ा कोई भी नहीं लगता उनका ही सम्मान हो वही मजदूर की भांति निरंतर कार्य कर रहे हैं , तभी समाज सेवी ने कहा आपने आज का अखबार देखा मेरी तारीफों के पूल बाँधे हैं सारे पृष्ठों पर पूरे एक लाख खर्च कर विज्ञापन छपवाया है ये रुपया मजदूरों के लिए ही तो खर्च किया है ।

सबसे बड़ा मजदूर कौन है ये कोई तय ही नहीं कर पा रहा था, बहस जोर पकड़ने लगी तभी सचिव महोदय ने सभी को समझाते हुए कहा साहब आप लोग इस विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन करवा लें स्कूलों, कालेजों, सरकारी दफ्तरों में आज ही नोटिस जारी करता हूँ, सबसे बड़े मजदूर कौन? के ऊपर आलेख, निबंध व कविता लेखन की प्रतियोगिता हो तभी वहाँ बैठे कवि महोदय ने भी अवसर का लाभ उठाते हुए कहा मेरे संचालन में देश तो क्या विदेशों में भी पूरे वर्ष भर काव्योत्सव होगा जिसमें इनकी दशा एवं दिशा पर जागरुकता अभियान चलाया जाएगा । सांसद महोदय ने भी तत्काल इस योजना को हरी झंडी दिखाते हुए कहा दिया हम तो आप सबके सेवक हैं जो भी हो आप सभी मुझे अगले मजदूर दिवस से पहले रिजल्ट दें आखिर लोगों के प्रति जबाब देही भी कोई चीज होती है । इस बात पर सहमति हुई अगले महीने मीटिंग की डेट तय कर सभी गहरी मुद्रा धारण किए हुए अपने घरों को जल दिए ।

जीवन परिचय

नाम – छाया सक्सेना 'प्रभु'
जन्म दिनांक – 15/08/1971
स्थान – रीवा (म.प्र.),
शिक्षा – बी एस सी बी एड, एम ए राजनीति विज्ञान, एम फिल (नीति शोध)
लेखन विधा – सभी विधाओं पर लेखन, प्रकाशित पुस्तकें–साझा संकलन, उपलब्धि–कई साझा संकलन का सम्पादन, ई पत्रिका की प्रबंध संपादक, साहित्य संगम संस्थान की कोषाध्यक्ष ।
पता – माँ नर्मदे नगर, म. न. 12, बिलहरी, जबलपुर (म.प्र.)
मो./ईमेल – 9406034703, chhayasaxena2508@gmail.com

कुछ बोल रहा है मेरा लाल किला...

काश ! कोई मजदूर भी करता,,
लाल किले से सम्बोधन ।
खून पसीना बहा जहाँ पर,,
वहाँ होता उसका भी अभिनंदन ।
काश ! कोई मजदूर भी करता,,
लाल किले से सम्बोधन ।
ईट और मौरंग की दुनिया से,,
ऊपर वो भी उठता ।
महलों वाले उसकी कला का,,
करते वहाँ बंदन ।
काश ! कोई मजदूर भी करता,,
लाल किले से सम्बोधन ।
एक बार ही सही,,
वह भी खुश हो जाता ।
जिसे बनाया पूरे मन से,,
उसके लिए लगता चन्दन ।
काश कोई मजदूर भी करता,,
लाल किले से सम्बोधन ।
लेकिन शायद यह सपना है,,
न जाने कब पूरा होगा ।
आओ मिलकर कदम बढ़ाये,,
मजदूरो को कभी न ....
करना पड़े क्रंदन ।
काश कोई मजदूर भी करता....

दुनियां देखे अब समय का फेर...

वो गरीबो का हक,,
इस तरह से हड़पने लगे ।
जैसे की ये दौलत,,
साथ उनके जाएगी ।
क्यों जरूरतें उनकी ??
कुछ इस तरह से बढ़ गयी ।
पाप और पुण्य में,,
कोई अन्तर दिखाई न दिया ।
बस वो अपना,,
ख़्वाब पूरा कर रहे थे ।
कीमत फिर चाहे जो,,
चुकानी पड़ रही थी ।
व्यस्त इतने थे कि...
परिवार की कभी,,
अहमियत ही न समझ पाये ।
न पत्नी से कोई वास्ता,,
न बच्चों की कोई खबर थी ।
बस परिवार के लिए वो,,
एटीएम कार्ड बनकर रह गए ।
सब अपनी –अपनी,,
दुनिया में मस्त थे ।
किसी को किसी की,,
खबर ही न थी ।
वक्त की मार कुछ,,
उन पर ऐसी पड़ी ।
दिन भर बिस्तर पर,,
अब वो पड़े रहते है ।
पत्नी पार्टी में मस्त,,
बच्चें अपने में व्यस्त ।
नहीं दिये कभी,,
वो संस्कार की कोई आके...
पूछे उनका हाल ।
नौकर बेचारा रात दिन,,
करता है उनकी सेवा ।
जिसे उसने न कभी,,
इन्सान समझा था ।
गरीबों को न दी तवज्जो कभी,,
पैर की जूती समझा हमेशा ।
अब वो पछता रहा,,
क्या किया उम्र भर।
अब तो आँखो से...
आँसू भी रूकते नहीं ।

हम जिनसे है, वो ऐसे हैं

मेहनत करते है वो सब,,
अपना खून पसीना बहाते है ।
ज्यादा का नहीं लालच उनको,,
थोड़े में खुश हो जाते है ।
हमारे कम्पनी कारखाने जो,,
बुलदियो को छू रहे है ।
इनकी मेहनत का कारनामा है,,
नींव उसकी इन्हीं के दम पर है ।
ये कर्म को पूजा मानते,,
इनसे ही है
हमारी शान और शौकत,,
पर इनको कोई अभिमान नहीं ।
मजदूर है वो मजबूर नहीं,,
हम उनसे है वो हमसे नहीं ।
वो देश की शान है,,
भारत का अभिमान है...
उनकी मेहनत से ही,,
"हमारा देश महान" है ।

परिचय

नाम – सरिता तिवारी
योग्यता – एमए (समाज शास्त्र)
स्थाई पता – आजाद नगर(चिरेबसना)
पोस्ट–डिडसिया कला
बेलसर गोंडा – 271401
अभिरुचि – गीत, कविता की रचना, लेखन, संगीत

गजल

2122 2122 2122 212

हैं मेरे भारत के कितने हाथ, देखे ये जहाँ
इसका कोई है न सानी, आज कह दे ये जहाँ

सैंकड़ों मजदूर, सैनिक कितने ही दहकान हैं
एकता में बरकतें हैं, गौर कर ले ये जहाँ
(दहकान=किसान/देहाती आदमी)

आदमी की उन्नती ही देश की है प्रगती
सच नहीं कहता कभी भी भुस पे लीपे ये जहाँ

रंग बिखरे हैं, न्यारी खुश्बुयें हैं हर तरफ
ये बहारों का चमन है, देख भी ले ये जहाँ

शानोशौकत मेहनतों से, आन है अपनी वतन
मान जनता का सदा से, खूब जाने ये जहाँ

खेतियां दहकान करता, सरहदों पर हैं जवां
हम किसी से कम नहीं हैं जान भी ले ये जहाँ

ये हकीकत जानती दुनिया शुरू से आज तक
श्रमिकों की जिन्दगी सुधरे तो संवरे ये जहाँ

जिन्दगी मजदूर की 'आनन्द' बेहतर हो सके
काम ऐसा कर दिखाना, साथ भी दे ये जहाँ

गजल

2122 2122 2122 212.

श्रमिकों की जिन्दगी का सच बड़ा कडुवा सा है
मेहनतों के बाद भी तो हाल कब अच्छा सा है

कोई भी कल–कारखाना और मशीनों को सदा
जो चलाता रात दिन है आदमी छोटा सा है

तन पे कुछ हैं चीथड़े से क्या गजब की सादगी
और हाथों में हुनर इनके मगर बढ़िया सा है

टूटा–फूटा घर है कोई या बनी है झौंपड़ी
या कभी फुटपाथ पर सोया कभी जागा सा है

हो कोई मजदूर, खेतीहर या कोई कामगर
ये जिया है मेहनतों पर आदमी सच्चा सा है

कौन लिक्खेगा किताबें कौन छापेगा खबर
कम जरूरत इनकी हैं, जीवन बहुत सादा सा है

है नहीं ईनाम कोई, हैं नहीं शाबासियां
ये मगर ईमानवाला, कौल का पक्का सा है

ये सदा 'आनन्द' कहता, मांगता रब से दुआ
हो सके खुशहाल श्रमिक सच में ये सपना सा है

गजल

2122 2122 212

जिन्दगी को कर रहे आसान ये
सबकी खातिर जी रहे दहकान ये
(दहकान=किसान/देहाती आदमी)

काम करते कारखानों में सदा
कामगर जो देश की हैं शान ये

रात दिन मेहनत की खाते रोटियां
सच में सारे, देश का हैं मान ये

श्रमिकों की मेहनतें उद्योग में
इनसे जी डी पी बढ़ा है जान ये

ये तिजारत का बड़ा आधार हैं
हैं तरक्की की सदा से खान ये

जिन जमीनों पर किसानों का बसर
उन जमीनों को मिला वरदान ये

क्या कभी बंजर जमीं रह पाएगी
हल चलाता जब कभी दहकान ये

कोई खेतीहर कोई मजदूर हो
क्या गजब 'आनन्द' है इन्सान ये

परिचय

नाम – डॉ. आनन्द किशोर 'आनन्द'
जन्मतिथि – 04/12/1962
पता – A-31/120, Gali No. 5, मौजपुर, दिल्ली – 110053
शैक्षिणिक योग्यता– M.B.,B.S.
मो. 9891629335, 8920747891
ई मेल – anandkishore2263@gmail.com

वो कलाकार हैं गाड़ी के

उसकी प्रतिभा देख–देख कर मै तो सच में दंग रह गया
साथ में मेरे सब थे लेकिन उस क्षण को मै निःसंग रह गया
आवाज को उसकी सुन कर के लगा कोकिला गाई है
संगीत भी कुछ ऐसा था मानो शिक्षा पायी है
सब लोग हुए एकत्र और मन्त्र मुग्ध से हो बैठे
कुछ पल के लिए सभी खुद अपने को खो बैठे
आवाज में उसकी करुणा थी आँखों में विश्वास भी था
जीत रहा है सबके दिल को ऐसा कुछ आभास भी था
उम्र बहुत ही कम थी उसकी दस–बारह के पास ही थी
कुछ पैसे भी मिले उसे मन में ऐसी आस भी थी
गीत सुनाकर उसने सबको अपना कायल बना दिया
सबको मोहित कर बैठा और सबको घायल बना दिया
उससे हमने ये सीखा निष्ठा बहुत जरुरी है
करो काम कुछ भी लेकिन कर्मठता बहुत जरुरी है

उसको हम क्या दे सकते थे जो ह्रदय जीत कर चला गया
जाने कब आभास हुआ वो हमें मीत कर चला गया
जब भी गीत कोई सुनता हूँ याद मुझे आ जाती है
और उसके लिए हमेशा फरियाद निकल ही जाती है
उनकी प्रतिभा को दुनिया में एक नया मकाम मिले
मान मिले सम्मान मिले और उन्हें भी नाम मिले
जो कथा सुनाई है मैंने जो व्यथा बताई है मैंने
ना है स्कूली बच्चों की ना टीवी शो के बच्चों की
ना ही नाटक करते हैं ना ही अभिनय करते हैं
ये तो दो रोटी के खातिर काम भी सविनय करते हैं
ना ही चाहत अभिनय की ना अरमान खिलाडी के
जिन बच्चों की बात बताईवो कलाकार हैं गाडी के
वो कलाकार के गाडी के..................

मजदूर

जो अपनों की भूख मिटाने को घर से भूखे आए हैं
सर पर बोझा और हाथ में कुछ औजार समाये हैं
जिनकी चाहत है इतनी सी आज काम में चला सकूँ
अगर रात को घर में लौटू चूल्हा फिर से जला सकूँ
जिनका छोटा सा सपना बस आज की रोटी पाना है
अपनों का मै पेट भर सकूं इतना मुझे कमाना है
दिन–भर मालिक की दुत्कारों को वह सहते रहते हैं
अपना दुखड़ा किसे कहेंगे खुद से कहते रहते हैं

जो कहते हैं, आज की डांट को मै आज अभी ही भुला सकूं
अगर रात को घर मै लौटूं चूल्हा फिर से जला सकूँ
अगर हुई भी कभी थकन तो उनको आराम कहाँ हैं
रोज काम करते रहना है उन्हें भला विश्राम कहाँ है
सर्दी गर्मी दोनों ही उनको सहना पड़ता है
जिस हाल में उनको रखें मालिक उस हाल में रहना पड़ता है
जो कहते, पूरे ही न हो जो वो अरमान सुला सकूँ
अगर रात को घर में लौटूं चूल्हा फिर से जला सकूँ

परिचय

नाम – राहुल प्रसाद
शोध छात्र, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र ।
पता – सेक्टर 29 गांधीनगर गुजरात पिन –382030

मजदूरों की शक्ति

ये सामने जो देख रहे हो "ताजमहल"
किसी के प्यार का प्रतीक है
कितना धन खर्च हुआ, परिश्रम
वो समय लगा इसे बनाने में
जिसे देश व विदेश के लोग
देखने आते हैं आज के भी
जमाने में
ये मजदूरों की शक्ति का प्रतीक है
लंबी लंबी रेलवे लाइन हजारों मील
फैली हुई, बहुमंजिली इमारतें
आकाश छू रही हैं
बड़े बड़े जलाशय, टेहरी, भाखड़ा नांगल
जैसे बांध, सिंचाई के लिए नहरें
नदियों को पार करने बाले पुल
घाटियों से जाने बाली सड़क
ये मजदूरों की शक्ति का प्रतीक है
हैलीकॉप्टर वो हवाई जहाज जो
आसमान में उड़ते हुए देखते हैं आज
बड़े बड़े उद्योग
जिनमें हर तरह का सामान बनाते चाहे
जैसा हो उपयोग
ये मजदूरों की शक्ति का प्रतीक है
अपना तन मन एवं परिश्रम लगाकर
अपना पसीना बहाकर
कठिन से कठिन करता रहता
अपने मालिकों काम
फिर भी मालिक रखता है उनको
अपने से बहुत दूर
चाहकर भी मजदूर उनसे कुछ नहीं
कह सकता क्योंकि वो इतने हैं
मजबूर
ऐसा लगता है वो सभी कुछ
सह सकते
पर अपने मालिकों से कुछ नहीं
कह सकते
शायद
ये मजदूरों की शक्ति का प्रतीक है

नारी

ईश्वर की खुबसूरत रचना हो
अपमान चाहे कितना हो
हर हाल में खुश रहती हो
अपना दर्द न कभी
किसी से कहती हो
खुशियां देती हो
गम अपने दामन में
समेंट लेती हो
क्या कहूं
तुम्हारी कहानी
अनमोल है तेरी
कहानी
न लगाया जा
सकता है तुम्हारा मोल
श्रष्टि ही नहीं रहेगी
जिस दिन बंद हो
जायेगा तेरा बोल

परिचय

नाम – हरि–प्रकाश गुप्ता
पता – भिलाई जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)
मोबाइल नं – 7999133644

आरक्षण वरदान अथवा अभिशॉप

(१)

कारण कर्म प्रधान था, जाति वर्ग में भेद।
शोषण शूद्रों का किये, पढ़ पुराण अरु वेद।।
पढ़ पुराण अरु वेद, बने पंडित जँह ज्ञानी।
चर्मकार रैदास–भक्ति फल दुनिया मानी।।
जन्मे बाबा भीम, देव बन इनके तारण।
आरक्षण कानून, बनाये जिसके कारण।।

(२)

आरक्षण उत्थान का, अनुकरणीय उपाय।
किंतु योग्यता की नहीं, श्रेणी आप गिराँय।।
श्रेणी आप गिराँय, अन्य का हक मत छीनें।
जीयें सुख से आप, और दें सबको जीने।।
बिना जाँच आरोप, दंड दिलवाने का क्षण।
कर प्रदान अन्याय, दिखे करता आरक्षण।।

(३)

निर्धनता हर वर्ग में, बैठी पैठ जमाय।
आरक्षण आधार हो, वर्तमान में आय।।
वर्तमान में आय, ध्यान हित सबका रखकर।
संबंधों का स्वाद, देखिये फिर सब चखकर।।
श्रम से नाता तोड़, काम किसका है बनता।
आरक्षण वरदान, हरे हर की निर्धनता।।

सादर....
जय जोहार....

जीवन परिचय

नाम	–	सूर्यकान्त गुप्ता
जन्मतिथि	–	१७/०५/१९६३
वर्तमान पता	–	१००६, "लता प्रकाश" वार्ड नं. २१ श्री राम किराना स्टोर्स के पास, सिंधिया नगर दुर्ग (छ.ग.)
विधा	–	कविता, गीत, दोहे, छंद, चौपाई आदि
संपर्क सूत्र	–	मोबाइल
व्हाट्सऐप	–	7974466865
ईमेल	–	suryakant.gupta256@gmail.com

मैं मजदूर हूँ

मैं मजदूर हूँ
क्यों सबसे दूर हूँ
खुला आकाश
हमारा है
नदियाँ हमारी हैं
इन सबमें ही
जीता हुआ
सामने बच्चा
कराहता है
फिर भी
कर्म में लीन हूँ
मैं मजदूर हूँ
क्यों सबसे दूर हूँ
आत्मसंतोष
आधार जीने का
मानवता को
संगीत बनाया
सुख दुख का
जीने को मजबूर हूँ
हाँ मैं मजदूर हूँ
इसलिए सबसे दूर हूँ !

मजदूर

मजदूर
दो और दो मिलकर
बन जाते चार हाथ
और बन जाती
तस्वीर मुकम्मल
मजदूर कहे जाते हैं वो
जिनकी जिन्दगी
दिहाड़ी पर चलती है
जिनके चित्र
अक्सर
धड़विहीन ही
देखे जाते हैं
इनमें कोई रंग
नहीं दिखता
या तो श्वेत–श्याम
या तो सलेटी
कोमलता वाली रेखा
उकेरना भी मत
बस यूँ ही रहने दो
हाँ बस यूँ ही !

जीवन परिचय

नाम	–	श्रीमती अनिता मंदिलवार 'सपना'
साहित्यिक उपनाम	–	'सपना'
जन्मतिथि	–	04 फरवरी
जन्म स्थान	–	बिहार शरीफ (नालन्दा)
वर्तमान पता	–	जरहागढ़ शिव मंदिर के पास अंबिकापुर सरगुजा छ.ग
चित्र	–	संलग्न
राज्य	–	छत्तीसगढ़
शहर	–	अंबिकापुर
शिक्षा	–	स्नातकोत्तर (वनस्पति शास्त्र, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य) बी.एड, पीजीडीसीए
कार्यक्षेत्र	–	व्याख्याता पंचायत शासकीय हाई स्कूल असोला अंबिकापुर सरगुजा छ.ग
सामाजिक क्षेत्र	–	साहित्यिक समिति 'व्यंग्यम' की भूतपूर्व अध्यक्ष । (2) वर्तमान में राष्ट्रीय कवि संगम जिला सरगुजा छ.ग. की कार्यकारिणी सदस्य । (3) समभाव महिला मंच अंबिकापुर की सदस्य ।
विधा	–	गद्य एव पद्य (कविता, गजल, नाटक, रूपक, लेख, कहानी, हाइकु)
मोबाइल/व्हाट्सऐप	–	09826519494
प्रकाशन–साझा		
संकलन	–	1. हाइकु की सुगंध, 2. काव्य अमृत, 3. हिन्दी सागर पत्रिका, 4. मातृभाषा, 5. गजल संग्रह–गुंजन, 6. कथा संकलन–कथा सेतु ।
प्रकाशन विवरण	–	(1) नवभारत, दैनिक भास्कर, लोकमत, अंबिकावाणी समाचार पत्र में कविताओं लेख का प्रकाशन। (2) स्वर मंजरी, सत्य ज्ञान समागम,, व्यंजना में कविताओं का प्रकाशन ।
सम्मान	–	काव्य अमृत सम्मानः 2. हिन्दी सागर सम्मान, 3.दोहा शतकवीर सम्मान, 4.हिन्दी साहित्य सेवी सम्मान, 5. दोहा शतकवीर कलम की सुगंध सम्मान – २०१८, 6. अंतरा शब्दशक्ति सम्मान, 7. अर्णव कलश एसोसिएशन द्वारा साहित्य के दमकते दीप साहित्यकार सम्मान 2017, 8–अर्णव कलश एसोसिएशन बाबू बालमुकुन्द गुप्त हिन्दी साहित्य सेवा सम्मान 2017, 9. साहित्य संगम संस्थान दिल्ली द्वारा हिंद वीरांगना सम्मान 2018
अन्य उपलब्धियाँ	–	जनपरिषद भोपाल द्वारा प्रकाशित गन्थ लीडिंग लेडीज ऑफ मध्यप्रदेश एण्ड छत्तीसगढ़ vol I- & vol II एवं हू 'ज' हू मे जीवन परिचय का प्रकाशन । (2) मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आयोजित हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार एवं नवभारत मदसे डे प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार । (3) नवभारत द्वारा नप्र. प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार । (4) दूरदर्शन से प्रसारित 'भवदीय' कार्यक्रम में सर्वश्रेषठ पत्र लेखन का पुरस्कार । 5. दिसंबर 2017 में 'राष्ट्रीय कवि संगम' के संभागीय सम्मेलन में राज्य और राज्य के बाहर साहित्य में योगदान के लिए सम्मानित ।
लेखन का उद्देश्य	–	अपने भावों को पन्ने पर उतारना साथ ही समाज में जागरूकता के लिए लेखन करना ।

शीर्षक 'मन सुमन अर्पण समर्पण'

मन–सुमन अर्पण समर्पण भाव
हृद–भण्डार है।
धूम्र–वलय–सा उठ रहा
दीप–मन के ज्योति–सा आकार है।
है विवश हृद–तंत्र मेरा
बस तुमसे ही मुझको विश्वास है।
मन–सुमन अर्पण समर्पण......।
गान–गुंजन कर भ्रमर
चंचल नयन अभिराम है।
तुमसे ही मेरे वाटिका–उपवन का
सौरभ–सुमन साकार है।
मन–सुमन अर्पण समर्पण.....।
आगमन श्रवण तुम्हारा
सप्त स्वरों में नव झंकार है।
एक तुम हो मनमीत मेरा
मुझको तुमसे अति प्यार है।
मन–सुमन अर्पण समर्पण.......।

नाम – बृजेश पाण्डेय
जन्मतिथि – ०२ मार्च, १९८४
वर्तमान पता – ग्राम पोस्ट–परासी,
तहसील– मनगवां, रीवा
सम्पर्क सूत्र – ९४२४६२३०१८
अणुडाक – bppandey20@gmail.com
पिता – श्री शिव कैलाश पाण्डेय
शिक्षा – परास्नातक हिन्दी
इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

शीर्षक 'गिरगिट रंग बदलते है'

गिरगिट रंग बदलते हैं बदला करें।
इंसान क्यों रंग बदलते हैं?
गैरों से तो छल करते ही हैं।
अपनों से प्रपंच क्यों करते हैं?
एक क्रौंच मरी नर क्रौंच के लिए।
इंसान क्यों इंसान को मारता है?
पालक है वायस कोकिल सुत का।
इंसान क्यों प्राण संहर्ता है?
पतझड़ तो होता है पेड़ों में।
लेकिन हरियाली फिर आ जाती है।
इंसान जलता रहता है।
उसमें क्यों प्रेम बेल पनपती नहीं है?

शीर्षक 'नर ही नर का संहारक है'

आज की हत्याएँ, हत्याएँ हैं।
पहले की वीर गाथाएँ हैं।
पहले होती थीं शौर्य और सम्मान के लिए,
अब होती हैं स्वार्थ और अपमान के लिए।
पहले का नरसंहार भी नरसंहार नहीं कहलाता था,
अब तो चार–पाँच हत्याएँ नरसंहार बन जाता है।
पहले लड़ता था मनुष्य चरित्र और ईमान के लिए,
अब लड़ रहा है केवल धन और अभिमान के लिए।
मृदु वचनों की प्याली में घोला है विष महागरल,
चाँदी का वर्क लगा मिष्टी में हीरों के हैं कण।
कुंडली मार साँप जैसे घर में ऐंठा है,
अब नर ही नर का संहारक बन बैठा है।
अब हत्याएँ फिर ना हों ऐसा कोई यत्न हो सबके लिए,
शांति और समृद्धि का मानव में प्रयत्न हो जीने के लिए।

हे श्रम देवता तुझे नमन

हे श्रम देवता,
तुझे नमन।
जग के शिल्पी,
तुमसे संभव यह जीवन।
तुम ढोते बोझ धरा का,
तुमसे होता सृजन।
तेरे ही कारण आबाद होता,
यह सुंदर चमन।
खुद बसते झोपड़ी में,
सबको देते महल उपहार।
अभावों भरी जिंदगी जीकर भी,
कभी न करते हार स्वीकार।
विश्व श्रम दिवस की पुण्य वेला पर
स्वीकार करो हमारा अभिनन्दन।
सुरभित करो चारों दिशायें,
लगा निज श्रम चन्दन।

न जाने क्यों ?

एक मजदूर,
सम्पन्नता से दूर,
विवशता से भरपूर,
जब अपनी हड्डियाँ तोड़ता है,
तब किसी का महल जोड़ता है।
श्रम का साधक,
आधी रोटी खाकर भी,
सबके हित में जीता है।
फिर भी न जाने क्यों?
समाज की संवेदना का प्याला,
आज भी उसके लिये रीता है।

आनन्द वर्धन शर्मा

जीवन परिचय

रचनाकार पूरा नाम	–	आनन्द वर्धन शर्मा
माता/पिता का नाम	–	सुशीला देवी डॉ. (स्व.) रघुराज शरण शर्मा
वर्तमान/स्थायी पता	–	K–91, कमलानगर, मुरादाबाद
फोन/व्हाट्सएप नं.	–	7055121934
ई–मेल नं.	–	mravsharma@gmail.com
शिक्षा	–	एम.ए., बी.एड.
सम्प्रति	–	वरिष्ठ प्रवक्ता, इ.का. नौगाँव कफड़ा, जिला–अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड।
साहित्यिक गतिविधियाँ	–	स्वप्नगंधा, पुष्पगंधा, अनुमेहा, अखिल भारतीय काव्यधारा, संदल सुगंध, संगम संकल्पना, कविता अभिराम, शब्द–शब्द महक, साहित्य उदय, अभिव्यक्ति, उजास, अविरल धारा आदि साझा काव्य संकलनों में कविताओ, तथा दीप देहरी पर (लघु कथा) के प्रकाशन के साथ–साथ अन्य पत्र–पत्रिकाओं व राष्ट्रीय सेमिनारों में रचनाओं/आलेखों को स्थान। समय–समय पर प्रतिष्ठित काव्य मंचो से कविता पाठ। फेस बुक/व्हाट्स एप्प (इंटरनेट माध्यम) द्वारा नियमित रूप से कविताओ का प्रेषण।
सम्मान/पुरस्कार	–	प्रकाश चन्द्र सक्सेना, 'दिग्गज मुरादाबादी', स्मृति सम्मान। काव्य प्रज्ञ सम्मान। साहित्य मनीषी सम्मान। काव्य रंगोली साहित्य भूषण सम्मान 2017। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली द्वारा काव्य सृजन के क्षेत्र में श्रेष्ठता सम्मान। लघुकथा श्री सम्मान। अक्षर श्री सम्मान। काव्य साधक सम्मान। काव्य भूषण सम्मान। काव्यरथी सम्मान। साहित्य शिखर सम्मान।
आत्म कथ्य	–	ह्रदय हो या मानव का परिवेश, जहाँ भी दृष्टि जाती है, अनुभूतियाँ तथा संवेदनायें यत्र, तत्र, सर्वत्र बिखरी हुयी हैं। इनको ही शब्दों का परिधान पहनाना ही कविता है।

बाल मजदूर

पूज्य हैं जो किसी के लिए,
हैं निरर्थक वे किसी के लिए
पर वे ही प्राणी पीड़ित समझ,
सुख–दुख में हर पल साथ जिये ।
अभावों से पीड़ित जो,
झुग्गियों के वासी हैं
हम करें कैसे विस्मृत,
वे भी तो भारतवासी हैं ।
देख निर्धनता का ताना–बाना,
मन का दीपक बुझ जाता है
पीड़ित पीड़ा में देख रत,
अश्रु प्रवाह हो जाता है ।
मानवता के रथ पर किये,
सवार मानस के विचार
कैसे पूरी करें साधें,
कैसे दें साधन अपार ।
बचपन की नहीं सुधी,
मजदूर बनने को आबद्ध
जीविकोपार्जन में ही रत,
शिशु सलोने लगते वृद्ध ।
कोमल सुनहरे सपने उनके,
कीचड़ से ही सन जाते हैं
मजदूरी के दलदल में,
आधे–अधूरे रह जाते हैं ।
जीवन–वीणा में झंकार मात्र है,
प्रलय होता मस्तिष्क में
मोती–मोती टूटते–बिखेरते,
क्या जुड़ सकेंगे भविष्य में ?

रवि रश्मि 'अनुभूति'

जीवन परिचय

नाम – रवि रश्मि 'अनुभूति'
जन्म / स्थान – 28 नवंबर / दिल्ली
मातृभाषा – एम.ए.बी.एड.
अन्य – इंस्टीट्यूट ऑफ जर्नलिज्म, नई दिल्ली तथा अंबाला छावनी से पत्रकारिता कोर्स ।
पुरस्कार प्राप्त – महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार, पंडित दीनदयाल पुरस्कार, मेलवीन पुरस्कार, पत्र–लेखिका पुरस्कार, श्रेष्ठ काव्य एवं निबंध लेखन हेतु उत्तर भारतीय सर्वोदय मंडल, भारत जैन महामंडल योगदान संघ द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित ।
संपादन / लेखन – 1971–72 में 'रश्मि' नामक पत्रिका का संपादन । इसके अलावा देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं, जैसे–उर्वशी, नव संदेश (म.प्र.), नवभारत, नव भारत टाइम्स, महानगरी एक्सप्रेस, मेरी सहेली, समान्तर, जनसत्ता, राष्ट्र विचार, दोपहर, हमारा महानगर, दोपहर का सामना, निर्भय पथिक, मंगलदीप, जैन जगत, ओसवाल जगत, गृहशोभा आदि सहित अनेक पत्र–पत्रिकाओं में गीत, गजल, कविताएँ, नाटक, लेख, विचार, समीक्षा आदि निरंतर प्रकाशित । hindipratilipi.com, matrubhasha.com, poet251.blogspot.com पर रचनाएँ प्रकाशित ।
राष्ट्र हित में दूरदर्शन के लिए कार्य – 'मुंबई दूरदर्शन केंद्र द्वारा, मेरे द्वारा निर्देशित, नाटक 'जागे बालक सारे' का 20 फरवरी, 1990 को प्रसारण । 'मुंबई दूरदर्शन केंद्र द्वारा 'कारगिल के शहीदों को सलाम' कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया, जिसमें शहीदों के सम्मान में काव्य पाठ हेतु विशेष रूप से आमंत्रित किया गया । 'दिल्ली से प्रसारित नारियों पर आधारित 'औरत' धारावाहिक में साक्षात्कार ।
राष्ट्र हित रेडियो के लिए कार्य – 'रेडियो श्रीलंका के कार्यक्रमों में– कहानी 'चाँदनी जो रूठ गई', 'नारी जगत में नाटिका 'कविताओं की कीमत', 'प्रसारित कविता 'मुस्कुराहटें' को प्रथम पुरस्कार, 'तथा' कई रचनाओं व लेखों का प्रसारण । 1970–75 । 'आकाशवाणी मुंबई, परभणी और औरंगाबाद से कई रचनाओं का प्रसारण ।
सम्मान – 'समस्तीपुर (बिहार) के साहित्यिक सांस्कृतिक चेतना विकास मंच के अर्चना लोक द्वारा साहित्य शिरोमणि उपाधि । 'प्रतापगढ़ (उ.प्र.) की साहित्यिक सांस्कृतिक अकादमी द्वारा साहित्य श्री की उपाधि । 'और भी कई संस्थाओं द्वारा सम्मानित । 'ऑलराउंड अकादमी द्वारा 'ऑलराउंड मणि सम्मान – 5.9.2013. 'ग्वालियर साहित्य कला परिषद द्वारा 30, सितम्बर, 2014 को प्रदत्त' काव्य किरण सम्मान । 'रंजन कलश संस्था, भोपाल द्वारा माहेश्वरी सम्मान – 2015. 'ज्ञानोदय साहित्य संस्था, कर्नाटक ज्ञानोदय साहित्य सेवा सम्मान–2016. 'राज रचना कला एवं साहित्य समिति द्वारा 'रचना साहित्य रत्न–2017, 'नायाब सखी साहित्य परिवार द्वारा सखी गौरव सम्मान–9 जुलाई, 2017. 'साहित्यायन साहित्य सम्मेलन 2017, ग्वालियर' दिव्य तूलिका सम्मान–10 सितम्बर, 2017. 'अमेरिकन बायोग्राफिकल इंस्टीट्यूट द्वारा 'विमन ऑफ दी इयर' उपाधि प्राप्त –1999. अन्य सम्मान–'व्हाट्सऐप पर अर्णव कलश एसोसिएशन, महफिल ए गजल साहित्य समागम, जय जय हिंदी द्वारा सम्मानित ।

मजदूर हुँ मैं

राजमहल रचता हुँ फिर भी
रहा दिलो से दूर
ताज महल गढ़ डाला हमने
मैं तो हुँ मजदूर ।

पत्थर गढ़ गढ़ हाथ छिल गये
तोड़ के पर्वत पैर
नदी ताल और खेत सँवारे
रखूँ न मन में बैर
ख़ून पसीना बहा के अपना
तन कर डाला चुर
ताजमहल गढ़ डाला हमने
हम तो हैं मजदूर ।

मेरे दोनो हाथ ही मेरे
सच्चे आभूषण हैं
मातपिता और खुदा हमारा
भू का कण कण हैं
नही शिकायत कोई हमको
नही किसी का नूर
ताजमहल गढ़ डाला हमने
हम तो हैं मजदूर ।

एक झोपड़ी गढ़ न पाया
अपनी की ख़ातिर मैं
एक बिछोंना ला न पाया
सपनो की ख़ातिर मैं
गढ़ता हुँ तकदीर तुम्हारी
पेट में रखकर भूख
ताजमहल गढ़ डाला हमने
हम तो हैं मजदूर ।

आँधी पानी तूफाँ आये
काम नही रुकता है
पत्थर पत्थर राम तराशूँ
श्रमिक नही थकता है
शिल्पकार हुँ गढ़ता रहता
रहे छांव या धूप
ताजमहल गढ़ डाला हमने
हम तो हैं मजदूर ।

श्रमिक का दर्द

मैं श्रमिक हुँ पत्थरों को नाम देता फिर रहा
मूक प्रतिमा का सृजन कर,नाम देता फिर रहा ।।

पूजता जिसको जहाँ वो कृति मेरी रचना मेरी
प्रार्थना औरों की बनकर दान देता फिर रहा

हमने मंदिर और शिवालय को तराशा रात दिन
पत्थरों के जिस्म का वो गान करता फिर रहा ।।

एक "श्रमिक का दर्द "यह वह गढ़ सका न रोटियाँ
और यह भंडारा भर भर खान देता फिर रहा ।।

हमने एक पाषाण गढ़,पूजा के काबिल कर दिया
और यह भगवान बन वरदान देता फिर रहा ।।

मैं युगों से पत्थरों में भाव भरता रह गया
और यह पंडितो सा ज्ञान देता फिर रहा ।।

परिचय

नीरज अग्रवाल
बिलासपुर, छत्तीसगढ़
मो– 8359067141

माँ की साधन

माँ का सारा जीवन एक साधना है ।
माँ को समर्पित मेरी हर आराधना है ।

कितनी बार ये सोचा होगा मर जाती हूँ ।
जीवन दुख का सागर है, मैं टर जाती हूँ ।
पर मेरे मुख को देख सही हर यातना है ।।
माँ को समर्पित मेरी हर आराधना है ।।

सजदे में रहती है जब संकट आते हैं ।
उसकी दुआओं से हर दुख कट जाते हैं ।
मेरे लिए ही उसकी हर एक प्रार्थना है ।।
माँ को समर्पित मेरी हर आराधना है ।।

मेरे जीवन के सुख से बो मुस्काती है ।
उन्नत मैं होऊँ तो वो सुख पाती है ।
करती प्रभु से मेरे हित की याचना है ।
माँ को समर्पित मेरी हर आराधना है ।।

माँ का सारा जीवन एक साधना है ।
माँ को समर्पित मेरी हर आराधना है ।।

सुश्री ए मंसूरी 'आरजू'

टूटे रिश्ते

बातों ही बातों में देखो बिगड़ गई बात ।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

कुछ तुमने हमसे कहा, कुछ हमने तुम से कहा ।
मानी ना अपनी खता, एक दूसरे से यूँ कहा ।
तुमने ये कैसे कहा, तुम्हारी क्या अवकात ।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

झगड़े ये आगे बढ़े,जब हम तुम दोनों लड़े ।
झुकना कोई ना चाहे,अपनी जिद पे हम अड़े ।
जीता कोई नहीं, मिली दोनों को मात ।।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

माफियाँ माँगने पर भी जो बात ना बनी ।
साले और बहनोई में जाने कैसी ये ठनी ।
बहन बिना भाई की निकली सूनी बारात ।।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

पल भर में पिघल जाएँ,जो मिले अहम की आँच ।
सहेज के रखना इन्हें, रिश्ते हैं कच्चे काँच ।।
रेशम की डोरी हैं ये स्नेह की सौगात ।।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

बातों ही बातों में देखो बिगड़ गई बात ।
टूटे रिश्ते पल में छूटा जीवन भर का साथ ।।

परिचय

कवयित्री – सुश्री ए मंसूरी 'आरजू'
पता – जाम रोड उमरानाला जिला
छिंदवाड़ा (म.प्र.) 480107
मोबाइल – 9424902567, 9098902567

आहिस्ता चल

आहिस्ता चल जिंदगी, अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है

रफ्तार में तेरे चलने से
कुछ रूठ गए कुछ छूट गए
रूठों को मनाना बाकी है
रोतों को हँसाना बाकी है

कुछ रिश्ते बनकर, टूट गए
कुछ जुड़ते–जुड़ते छूट गए
उन टूटे–छूटे रिश्तों के
जख्मों को मिटाना बाकी है

कुछ हसरतें अभी अधूरी हैं
कुछ काम भी और जरूरी हैं
जीवन की उलझ पहेली को
पूरा सुलझाना बाकी है

जब साँसों को थम जाना है
फिर क्या खोना, क्या पाना है
पर मन के जिद्दी बच्चे को
यह बात बताना बाकी है

आहिस्ता चल जिंदगी, अभी
कई कर्ज चुकाना बाकी है
कुछ दर्द मिटाना बाकी है
कुछ फर्ज निभाना बाकी है

कुछ मुक्तक

जो आँखों मे रहते हैं उन्हे याद नही करतें।
जो दिल मे रहते हैं उनकी बात नही करतें।
उन्हे क्या पता की हमारी रूह मे वो बस चुके हैं,
तभी तो मिलनें की हम फरियाद नही करते!

बेचौन थे इतने देखने को नैन
जाने कहां खो गए मिले जोनैन
आस लिए बैठे हैं देख रास्ता नैन
खुद ने नैन सेक कर दिया हमें बैचेन

तृष्णाओ के मरूस्थल में
जब मन कुरंग हो जाता है
हर बार टूटकर बिखरता है
जब अहं यहां टकराता है

जो आँखों मे रहते हैं उन्हे याद नही करतें।
जो दिल मे रहते हैं उनकी बात नही करतें।
उन्हे क्या पता की हमारी रूह मे वो बस चुके हैं,
तभी तो मिलनें की हम फरियाद नही करते!

परिचय

नाम – संगीता गुप्ता
पिता – हरिशंकर गुप्ता
पता – 69, देवी निवास श्रीराम वार्ड, मंडला

क्यो ऐसा करते हो तुम

चुप चुप उदास खुद से क्यो रहते हो तुम,,
दिल का क्या फसाना है क्यो कहते नही तुम

एक बार मन की बात हम से कह लो।।
दुनियां के दिये गम क्यों सहते हो तुम।।

नाराजगी है हम से या मोहब्बत है हमसे,,
दूर दूर क्यों रहते बताते नही हो तुम।

तेरे चेहरे से पढ़ लेती हूँ हाल सब तेरा।।
पलकें नीची कर क्यों मुझसे नजरें चुराते हो तुम।

इश्क करते हो तो दुनियां से डरते हो क्यो।।
फिर सोनु से इजहार ए मोहब्बत क्यों करते हो तुम।।

जिंदगी है तुम्हारी भी आजकल खफा खफा फिर,,,
हम से ही मुस्कुराने की बात क्यों करते हो तुम।।

गमों का अथाह सागर भरा है अँखियों में तुम्हारे,
हमे ही दिल लगाने को क्यों कहते हो तुम।।।

✍ गायत्री सोनू जैन मंदसौर

बिछड़ना

तेरा बिछड़कर जाना मुझे रुलाता है,
रातो की निदियाँ नैनो से भगाता है।

रूह कांप उठती है तन सिहर जाता है,
तेरी यादों का जब पतझड़ मौसम आता है।

मधुबन भी बिखरा बिखरा लगता है,
जब तू मुझसे सनम रूठ जाता है।

मेरी गलियों की राहें अब सुनी सुनी है,
बता सनम अब तेरा किससे नाता है।

मैं तेरे प्यार में बैठी हूँ उदास होकर यहाँ,
तू भी बता दिल को कैसे भरमाता है।

मैं तेरे इंतजार में कई राते गुजार देती हूँ,
तू बता आजकल कहाँ महफिल सजाता है।

✍ गायत्री सोनू जैन मंदसौर

परिचय

नाम – गायत्री सोनू जैन' मंदसौर'

मोबाइल नंबर – 7772931211

कामना

सास बहुबैठे कहते, कितनी प्यारी बात ।
मुख फुलाये पग सिमटे, किसके चिकने पात ।।

किसके चिकने पात, जने नहीं पूत कपूत ।
नंदी बैला कभी, था वही मेरा सपूत ।

बना गई वह दास, छुटे मंतर यही आस।
बहु सोच रही खास, परलोक सिधारे सास ।।

शोर

चोर बोलते शोर जी, रचना लिखते दाब।
आंखी तरेर देखिये, बोल गये ये ताब ।।

बोल गये ये दाब, रचना कहाँ उतारिये ।
आँख में नहीं आब, रचना बोल शर्मायिये ।।

करना उर की बात, कागज दिल तभी लिखते ।
खुल जाये जजबात, चोर ही चोर बोलते ।।

दोहे का प्रयास
समानता

हकीकत सामने खड़ा, चुरा रहा है आँख।
जाती प्रमाण वो रखा, चिल्ला चिल्ला के कांख ।।

जाती प्रथा मिटा रहा, खुद रखे ये प्रमाण।
मुफ्त माल हजम कर रहे, कहते देश समान।।

राजनीतिक कठपुतली, सज गया वोट बैंक,
जात पात कब बेचता, दिख गया ब्लेंक चेक ।।

हिरण फिर से छला गया, चाहता वही मौत ।
इंसान जो चाल चले, मरता ये बेमौत ।।

पतंग लड़ाय पेंच जी, मिल जाये तो बेल ।
आशा मंतर मारिये, खुल जाये ये जेल ।।

हिरन खारहे घास जी, हरियाली भी पेंच ।
मांस भक्षक वन घुमते, पतंग पकड़े घेंच ।।

नेता नहीं सरदार

रक्षक रक्षण कर रहे, सिर उठाय गद्दार ।
शब्द निंदा कर चलते, नेता है सरदार ।।

नेता है सरदार, वोट बैंक साध रहता ।
वोट मिले भरमार, सत्ता कुर्सी साथ दिखा ।।

सीमा पे ललकार, नेता ही बड़े भक्षक ।
उठा रखे तलवार, बने देश के रक्षक ।

पानी

देख सुरक्षित जल कहाँ, ठाकुर का वो कूप ।
नाले नदियाँ सूखती, दोहन करता भूप ।।

श्रमिक स्वेद जल कर रहा, उत्सर्जित यह धूप।
श्रम से जल वे सींचते, सुखसे रहता भूप ।।

बोतल पानी बेचते, केवल आज रसूख ।
जीव जंतु सब मर रहे, स्रोत नीर गय सूख।।

मानसरोवर घूमते, ढूंढत सुख अरु चौन ।
पानी में डुबकी लगा, छिनते मनकी चौन।।

परिचय

नाम – 'नवीन कुमार तिवारी'
पता – आई जी 14–2 नेहरू
नगर पूर्व 490020
भिलाई नगर दुर्ग
मो. नं. – 9479227213

भूला बचपन

कोशिशों को अक्सर नाकामयाब होते देखा है
फिर भी तिनका जोड आशियाना बनते देखा है।

मिन्नतों में फिर से लौटा दो मेरा बचपन मैंने
नानी की कहानियों को कुछ भूलते हुए देखा है।

सोचती हूं दर्शन में तेरे खुद को लूटा दू भगवन
क्योकिं जीवन को यूँ ही रेत की तरह ढहते हुए देखा है।

उमीदों का उफान उमड़ पड़ता है अक्सर
ख्वाहिशों की तड़प को करवट बदलते हुए देखा है।
कोशिशों को अक्सर...

साथी

भवरें की गुंजन है साथ तुम्हारा अंजान गजल
है साथ तुम्हारा।

सुबह की खिलखिलाती धूप
तो कभी उन्मुक्त आकाश है साथ तुम्हारा।

झरने का मीठा पानी तो कभी फूल पलाश
है साथ तुम्हारा।

हंसी का खजाना यादें भूली सी तो कभी
दिवानगी का सबब है साथ तुम्हारा।

डॉ. श्वेता चौबे "मधुलिका"

मेरी माँ

क्या लिखूं कविता तुम पर
लेखनी को शब्द नही मिलते।
चंचल चपल पारंगत हो तुम
या निर्झर निराकर हो।

क्या रचु रचना तुम पर
की काव्यों को छंद नही मिलते।
क्या लिखूं कविता तुम पर
कि लेखनी को शब्द नही मिलते।।

अनुपम सी मुस्कान वाली
अविरल सी ध्वनि लिए
काल काल बहती नदियों
से भी तेज हो तुम।

क्या सोंचु उपमा तुम पर
की ह्रदय में अलंकार नही टिकते।
क्या लिखूं कविता तुम पे
लेखनी को शब्द नही मिलते।।

पत्थर की मूर्ति से कठोर
निराकार ब्रम्ह का सगुन आकर
शौर्य और तेज चहेरे पे
और ह्रदय में कोमलता का वास
क्या बनाउ प्रतिबिम्ब तुम्हारा
की शिल्पकार से आकर नही गढते।

परिचय

नाम – डॉ. श्वेता चौबे "मधुलिका"
पता – १२/३२ बंगला, भिलाई,?
जिला– दुर्ग, छत्तीसगढ़
मो. नं. – 9926136299

आ जाओ झांसी की रानी

युग कर रहा है पुकार

नारी शक्ति की विनती बारंबार

बचपन मे कर दिया परिणय संस्कार

बालविवाह की बेडियो मे जकड़ा जीवन संसार

दहेज की आग मे जलती नारी

सास–ससुर के तानो की मारी

न मिल रहा कोई मंच परंपराओ के जकडे प्रपंच

नारी को उसकी शक्ति का अहसास करा दो

उसकी योग्यता का आभास करा दो

मन मे नया विश्वास जगा दो

आग लगन संकल्प की लगा दो

नारी को फिर से बना दो मर्दानी

आ जाओ झांसी की रानी

भूपेंद्र सिंह पंवार राजा

बिटियां रानी प्यारी

दुलारी, लगे घर की फुलवारी

बेटी को पढाओ, आगे तुम बढाओ

बेटी की प्रतिभा को मंच दिलाओ

बेटियां नही है कमजोर

बेटियां है साझ और भोर

बिटियां परिवार सजाती है

बिटियां घर संवारती है

माता–पिता, भाई–बहन, दोस्त

हो या गुरू

सब मिलकर ले बेटियो को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी

बिटियां रानी प्यारी, दुलारी

लगे घर की फुलवारी

भूपेन्द्र सिंह पंवार "राजा"

परिचय

नाम – भूपेंद्र सिंह पंवार 'राजा'

पूरा पता – ग्राम–बिरियाखेडी पोस्ट–बुरानाबाद ?
तेहसील–खाचरौद जिला–उज्जैन (म.प्र.)–456224

मो.नं. – 9754655132

मैं श्रमिक हूँ

मैं श्रमिक भिखारी नहीं।
मैं कर्मठ हूँ बेकार नहीं।
मैं एक पत्नी दो बच्चों
की मां हूँ।
घर का बोझ उठाती हूँ।
कुछ घरों मे बर्तन साफ
किया करती हूँ।
कहीं झाडू पटका करती हूं।
बच्चे पढ लिख कर लायक बन जाए।

बारीश हो या सर्दी धूप से
भी नहीं डरती हूँ।
पैरों मे कंजयी हो जाती है
हाथ की उंगलियाँ गल
जाती है सोडे से।
पर सब सहकर भी काम
मैं करती हूँ।
हाँ हाँ मैं श्रमिक हूँ।

जीवन परिचय

नाम	–	डॉ. राजलक्ष्मी शिवहरे
माता श्री	–	स्व.श्रीमती चन्द्रकला गुप्ता
पिता श्री	–	स्व. श्री शशिकुमार गुप्ता
जन्म	–	22 फरवरी 1949, गोंदिया, महाराष्ट्र ।
पता	–	सी–13, एच. आय. जी धनवन्तरी नगर,जबलपुर 482003 (म.प्र.)
विवाह	–	ग्राम कहानी जिला सिवनी
पति	–	डॉ आर. एल. शिवहरे प्राध्यापक (सेवा निवृत्त) शास. इंजी महाविद्यालय, जबलपुर मध्यप्रदेश
शिक्षा	–	एम. ए. पी एच डी (हिंदी साहित्य)
रचनाएँ	–	काव्य संग्रह– मणिदीप कहानी संग्रह–उत्सर्ग आठ उपन्यास प्रकाशित दो बाल कहानियों की किताबें आध्यात्मिक– रामायण दर्शिका, ग्यारहवें रूद्र श्री हनुमानजी। श्रीमद भागवत के नौ स्कन्द प्रकाशित। उपन्यास दूसरा केनवास कादम्बरी संस्था से पुरस्कृत। उपन्यास गाथा कादम्बरी संस्था से पुरस्कृत । उपन्यास साधना अखिल भारतीय हिंदी साहित्य जयपुर से सम्मानित । अनेक संस्थाओं से शताधिक सम्मान प्राप्त ।
विदेश यात्रा	–	अन्तर्राष्ट्रीय समकालीन साहित्य सम्मेलन लन्दन यू.के.3 नवम्बर 2006 से 9 नवम्बर 2006 तक। राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता पर व्या ख्यान। (बर्मिंघम में)। आठवा हिंदी सम्मैलन अमेरिका में सरकारी प्रतिनिधित्व करने का अवसर मिला। दुबई में समकालीन साहित्य सम्मेलन में भाग लिया।

मां का परिश्रम

मां बहुत दुखी है, बुढ़ापा आ गया।
सामने ही उसके, अंधेरा छा गया।
चार बेटियों के बाद, मां ने पाया लाल।
भूल गया मां को, साथ स्त्री पा गया।

पालने में जिसको, माँ झोंकती शक्ति।
उसका बने भविष्य, मिटाती रही हस्ती।
करती काम घर में, माँ खेत में करती।
खुद भूखी लाल का, मां पेट है भरती ।
दुनिया इस लाल से, अब पूछती सवाल,
हसरतें वो मां की, ऐसे क्यों खा गया।

धूप देखती कभी, न बरसात देखती।
मेहनते कड़ी है, न दिन रात देखती।
मां से किए वादे, पुत्र भूला पल में।
आई बहू फूटी, आंख नहीं देखती।
मां के किए परिश्रम, बेटे बने खुशहाल,
देख आंख अश्रु का, सैलाब आ गया।

किसान

चलो किसान का दर्द देखने।
औंस बारिश में सर्द देखने।
दाम मिला क्या उसे फसल का,
सूखे खेत की गर्द देखने ।

मेहनतकश की खूबी खटिया।
घुटकन कर्जा में डूबी लुटिया।
कैसे पीरे हाथ हुइये अब,
भई सयानी रूबी बिटिया ।
आया न कोई मर्द देखने।

सूखे खेत..............

घिस गये जूता गांव शहर में ।
भोर दोपहरी चार पहर में।
दफ्तर दफ्तर काट के चक्कर,
फेंके कागज लौट नहर में।
मिलो ने फसल को हर्ज देखने ।

सूखे खेत...............

बंधुआ मजदूर

आह विकट वो मेघ गर्जना।
सिया पराई सेज हर्ज ना ।
बार गरीबी करती छाती –
चुकता बाकी खेत कर्जना ।

अब तो छोड़ दीजियो मालक।
चुक जे कर्जा एकाध सालक ।
पुरखन ठहरे आप के बंधुआ,
समझ लीजियो नादां बालक।

लात मारियो मोय हर्ज ना ।
चुकता बाकी खेत..........

अरे दूर हट छू मत लेना ।
यह सामान सिया को देना।
बिन माँ बचवा रात न सोवे–
मालक अब हो पाये जेना।
हांड लीजियो मोय गर्जना।

चुकता बाकी.............

जीवन परिचय

नाम – सुधा गगन कनौजे दमोह मध्यप्रदेश

नमन साहित्य उद्गार
नवल विधाएं–02
बुधवार/25–4–18
विषय–श्रमिक
विधा–मनहरण घनाक्षरी
8,8,8,7 अंत में गुरू अनिवार्य–

विधि की विडंबना पे
आंसू न बहाते हैं ये
माथे से बहे पसीना
काम को हराते हैं

भरोसा करें स्वयं पे
करते श्रम की पूजा
और नहीं काम दूजा
श्रमिक कहाते हैं

करते जहां की सेवा
भेदभाव बिन किसी
राह है कठिन पर
हार नहीं खाते हैं

विश्वास नियति पर
जग से ना आस कोई
एक सी शाम सुबह
प्रभु गीत गाते हैं

मजबूत इरादे हैं
मजबूत तन भी है
लौह जैसा मन भी है
नहीं शरमाते हैं

भूख को हराकर ही
सबक यह सीखा है
जेब में हो पैसा जब
सपने सुहाते हैं

भूल कोई हुई होगी
जिसकी है सजा पाई
मान लिया अब यही
क्रोध नहीं लाते हैं

करते हैं मजदूरी
बेचते ईमान नहीं
रूखी सूखी खाते पर
ना डगमगाते हैं

जीवन परिचय

नाम – दीपा गुप्ता
जन्मतिथि – 22–7–66
पिता का नाम – श्री राजकुमार गुप्ता
माता का नाम – श्रीमती शकुंतला गुप्ता
पति का नाम – श्री संजय कुमार गुप्ता
पता – 57, ब्रजलोक कालोनी, प्रेम नगर, बरेली (उ.प्र.)
मो. नम्बर – 8273974532
E-mail – sanjaydeepa2822@gmail.com
जन्म स्थान – बरेली

शिक्षा – स्नातकोत्तर, इंटीरियर डिजाइनर, कम्प्यूटर कोर्स एवं रेकी लेवल 2 सम्मान किशोरावस्था से ही लेखन में रुझान, भाषण एवं वाद विवाद प्रतियोगिता एवं कवि सम्मेलनों में सहभागिता,आकाशवाणी पर काव्य पाठ अमर उजाला के "काव्या" कालम में "रेल हादसा" एवं "जय गङ्गे" कविताओं का प्रकाशन। अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका "प्रयास", "तितली", "सवेरा", "वर्तमान अंकुर", "जीवन प्रकाशन" आदि विभिन्न पत्रिकाओं में रचनाओं का प्रकाशन ट्रू मीडिया पर अनेकानेक रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं। यू ट्यूब पर "जय गङ्गे" "निर्जन पथ" "शिवाराधना" "महर्षि दयानंद की डॉक्यूमेंट्री", "शेरों पेसवार", "धोनी" सहित 10 वीडियो का प्रसारण।

साहित्य सागर, मुक्तकलोक, आदि कई ग्रुप्स में कविताओं का प्रकाशन, विश्व रचनाकार मंच द्वारा "हिंदी सेवी" सम्मान, मुक्तकलोक द्वारा "शब्द श्री" सम्मान, साहित्य संगम संस्थान द्वारा "श्रेष्ठ रचनाकार" सम्मान "श्रेष्ठ टिपण्णीकार" सम्मान, "भक्ति गौरव" सम्मान, "हिंद वीरांगना" सम्मान, हनुमान जयंती पर दोहा प्रतियोगिता में भक्तराज सम्मान, आदि। नारी सुवास मंच द्वारा तीन बार सम्मानित, गहमर वेलफेयर सोसाइटी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर "साहित्य सरोज शिखर सम्मान" कविताओं के साथ–साथ गीत, गजल, दोहे, मुक्तक्त, गीतिका, छंद, हाइकु, वर्ण पिरामिड, तांका विद्या, सायली छंद, लघुकथा आदि में भी नियमित लेखन। एक साझा संग्रह "रिश्तों के अंकुर", एक एकल संग्रह "बालदीप" भाग–1 के उपरांत यह बालदीप का तीसरा अंक है।

श्रम सैनिकों का विधा - प्रतिभा छंद

विधान {सगण भगण तगण नगण गुरु गुरु}
(112 211 221 111 2 2)
14 वर्ण, 4 चरण, (यति 8–6) दो–दो चरण समतुकान्त।

मुझको सैनिक भाता, तनमन घेरे।
विपदा भारत माता, चितवन तेरे ।।
जब तेरा बल जागे, जग डर जाता।
रिपु डाला तन नीचे, जहर मिटाता।।

सब माँ के रख वाले, अचरज कैसे।
तन सौपा यश पाले, करतब ऐसे।।
जनता भारत प्रेमी, निश दिन देखे।
मन मे चाहत तेरी, नमन सुलेखे।।

मद मे पाक मिटा दो, रज कण जैसे।
बल से चीन हिला दो, छल बल वैसे।।
तुम हो पावन माता, नमित रहेंगे ।
जग मे वीर सुगाथा, कवित कहेंगे ।।

चित मे सैनिक छाओ, तनमय मेरे ।
यश देखो गुण गाओ, 'छगन' घनेरे ।।
धन माता सुत नामी, नमन सहीदों।
तन खोया रख वारी, वतन हँसी दो।।

श्रम पर दोहे

भीगी देही काम मे, धरा जुड़ा पहचान ।
पाये मेहनत निखरे, हर्षोल्लास किसान।।

उठती नभ अट्टालिका, शोषित श्रम मजदूर ।।
सेठ दान से जीवनी, रखा काम मजबूर ।।

मेहनत शरण मे रहे, कैसा यह संसार ।
चालाकी धन कोश है, भरा पूरा अंबार ।।

अर्थ ज्ञान भंडार मे, मेहनत कवच जान।
बाधक आलस छोड दो, पाओ चेतन भान ।।

दोडो हैं मैदान भी, मेहनत करो आज ।
भाग्य भरोसा छोड दो, जुटो सदा नित काज।।

रचित लेख विचार भरे, ज्ञान विधान अनेक ।
सरस विपुल अपनी व्यथा, मंथन कथन विवेक ।।

भैंगी नैना विचरती, चमके देख कगार।
बहती लय से बिगड़ती, ठहरी जड दीवार।

राम भरोसा साथ है, नाथ करे उद्धार ।
अर्पित जो था वो किया, आप हुआ विस्तार ।।

जीवन परिचय

नाम – डॉ. अरविन्द 'दर्द'
पता – माता मंदिर के पास, छोटा बाजार, दतिया (म.प्र.) 475661
सम्पर्क – 09425726907
शिक्षा – एम.ए. (हिन्दी, अंग्रेजी, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, मनोविज्ञान) व्यवसाय – बैंक में नौकरीप्रकाशन, 1. हिन्दी में 9 पुस्तकें प्रकाशित, 2. अंग्रेजी में 50 से अधिक गाईड्स, सीरीज, ग्रामर की पुस्तकें, 3. अनेक पत्र–पत्रिकाओं में लेख अथवा रचनाओं का प्रकाशनसंपादन, 1. हित तत्व की ओर (छिमाहीपत्रिका) 2. मधुकर वाणी (वार्षिक साहित्यिक पत्रिका), 3. कायस्थ मंथन (मासिक पत्रिका), 4. साहित्य लोक (वार्षिक साहित्यिक पत्रिका)
सम्मान – मुख्यतःलगभग 55–60 राष्ट्रीय, प्रदेश स्तर व जिला स्तरीय सम्मान, पदः 7 जिला स्तरीय व 1 राज्य स्तरीय संस्था में महत्वपूर्ण पद
शपथ पत्र – मैं अरविन्द दर्द शपथ पूर्वक कथन करता हूँ कि उपरोक्त जानकारी पूर्ण रूप से सत्य है व मेरे द्वारा कुछ भी छिपाया नहीं गया है।

श्रमिकों को समर्पित हाइकु

(1) ये हैं श्रमिक
दीन हीन न कहें
ईश्वर कृति।।

(2) इंसान हैं ये
अपमान न करें
हक चाहते ।।

(3) हैं मजदूर
नही है मजबूर
सभी समझें ।।

(4) गरीब नहीं
स्वाभिमानी प्रकृति
श्रमिक बने ।।

(5) न हों शिक्षा से
वंचित, ये मानव
दें अधिकार ।।

(6) हैं श्रमिक भी
सम्मान के संभागी
न अपराधी ।।

(7) इनकी पूंजी
जी तोड़ मेहनत
रहते मस्त ।।

(8) बहाते स्वेद
करें कठोर श्रम
बच्चों के लिये ।।

(9) मजदूरों का
ढलता है पसीना
अमीर को क्या ?

(10) हैं ये गरीब
फैलाते उजियारा।
थकते नहीं ।।

(11) ये हैं मानव
ईमानदार, निरीह
न हो शोषण ।।

(12) करते श्रमिक
बहाते हैं पसीना
पेट के लिये ।।

(13) भूखे रहते
बद से बदतर
जीवन जीते ।।

(14) मनुज श्रमिक
विकास का पहिया
फैला उजास।।

(15) करते हैं ये
कठोर मेहनत
बच्चों के लिये ।।

(16) करें विकास
नर हो न निराश
पूर्ण संकल्प ।।

(17) जीते श्रमिक
चौन की नींद सोते
खुद्दारी से ।।

(18) न्याय के लिये
जुटाते सबूतों को
होते निराश ।।

(19) खपता जाता
मानव का जीवन
न्याय की आशा ।।

(20) निज क्षमता
पहचानते जब
होता विकास ।

(21) सीला बीनती
किसान की बिटिया
रोटी केलिए ।।

मजदूरों को समर्पित कविता

मजदूर

हाँ! हम मजदूर हैं
मेहनत कश हैं हम
वफादारी की घुट्टी
पीते बचपन से
पर,जीते खुद्दारी से भरपूर हैं ।
हाँ! हम......
निर्धन घर में पैदा होकर
नंगे व भूखे रहकर
शिक्षा से वंचित रहते
इसमें हमारा क्या कसूर है ।
हाँ ! हम.....
मेहनत की खाते हैं
ईमानदारी ही हमारा धर्म
झूठ फरेब से सदा ही
रहते हम दूर हैं।
हाँ! हम.....
कुदाल चलाकर, पसीना बहाकर
खेतों में उपजाते अन्न
सभी को देते भोजन
पर, भूखे पेट सोने को मजबूर हैं ।
हाँ! हम.....
उद्योगपति अहनिशि शोषण करते
न्याय के लिए दर–दर भटकते
पर,शांति, संयम, एकता से
पूँजीपतियों काअहं कर देते चूर हैं
हाँ! हम मजदूर हैं ।।

परिचय

नाम – डॉ. सुशीला सिंह
पता – लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)
मो. – 9450177317

श्रमिक

श्रमसाध्य अपने ये दिवस कुछ यूँ बिताता है श्रमिक ।
इस धूप मे थक हार कर घर लौट आता है श्रमिक ।।

दो जून की रोटी मिले सपना यही उसका सुनो ।
इन होटलों को देख मन मे मुस्कुराता है श्रमिक ।।

रिक्शे के पैडल मारकर पाँवों पड़े छाले मगर ।
बच्चों से अक्सर बात ये हँसकर छुपाता है श्रमिक ।।

इस भूख से उसकी लड़ाई है पुरानी सी बहुत ।
वो पेट पर ही बाँध कपड़ा जीत जाता है श्रमिक ।।

मासूम भूखे सो न जायें है यही चिंता उसे ।
सौ ग्राम ही हो पर वो सब्जी रोज लाता है श्रमिक ।।

मजदूर अपनी हसरतों से दूर इतना वो हुआ ।
खुशियाँ अगर मिल जाये तो फिर मुँह चुराता है श्रमिक ।।

बेकार बातें ये सियासत क्या भला कोई करे ।
उम्मीद के इस दौर मे ये बुदबुदाता है श्रमिक ।।

जीवन परिचय

नाम	–	कवि राज तरूण
जन्म दिनांक	–	21.05.1985
साहित्यिक उपनाम	–	कविराज तरूण सक्षम
पिता जी का नाम	–	श्री केशव प्रसाद सिंह
माता जी का नाम	–	श्रीमती किरण सिंह
पत्नी का नाम	–	श्रीमती पूनम सिंह
पता	–	डी–12, सेक्टर डी, एल डी ए कॉलोनी, कानपुर रोड़, लखनऊ – 226012
मोबाइल	–	9451348935, 9112341196
ई–मेल	–	Kaviraj.tarun@gmail.com
शिक्षा	–	इंजीनियर
व्यवसाय	–	बैंक अधिकारी (यूको बैंक)
संस्था से संबद्धता	–	साहित्य संगम, अश्मी एंटरटेनमेन्ट
सम्मान	–	काव्य श्री सम्मान, प्रेम सागर सम्मान
सृजन का उद्देश्य	–	आत्मिक व धार्मिक प्रेम की उन्नति और प्रचार–प्रसार व इलेक्ट्रॉनिक हिन्दी साहित्य के विकास के लिए अग्रसर।

मजदूर का जीवन

बाल रूप धरा पर आया कुल हर्षाया,
वसुंधरा के स्पर्श से मानव कहलाया।
भाग्य ने अपना निराला खेल दिखाया,
मानव को मजबूरी में मजदूर बनाया।
मजदूर बनकर कई भवन महल बनाएँ,
मेहनत से अनेक धनिकों के घर बसाएँ।
बड़ी मुश्किल से दो जून की रोटी खाएँ,
पूँजीपतियों को बिल्कुल तरस ना आएँ।
यायावर है घर बार नहीं, न कोई सहारा,
कभी इस गली कभी उस सड़क बसेरा।
धरा है प्यारा बिछौना, अंबर इनकी चादर,
मन के महाराजा है करते सबका आदर।
अपने दो हाथों से सबका जीवन सँवारें,
रात दिन श्रम करते कभी न हिम्मत हारे।
श्रमिक के बच्चे पेड़ की छाँव पलते बढ़ते,
पत्थर, बजरी और रोड़ी से ये खेल खेलते।
अहर्निशं श्रम से मंजिल पर मंजिल बनाते,
स्वयं के लिए एक मंजिल भी न बना पाते।
धन्य इनकी कारीगरी कुशल शिल्पी नंदन,
धरती के विश्वकर्मा को 'रिखब' का वन्दन।

जीवन परिचय

नाम — रिखब चन्द राँका 'कल्पेश'
पता — जयपुर

कलम का श्रम

लिखते लिखते थक जाती है
गीत पुराने अब ना गाती है।।
मासूम रहे गुमसुम देखो
कभी कभी अब ये रोती है
जन की पीड़ा सहती देखो
पन्ने पर कुछ ना कहती है
कलम सुजानी बड़ी सयानी
क्यों गुमसुम सी अब रहती है।।

जैसा मैंने इसे चलाया
इसने लिख दी वैसी माया
कलम दिवानी भर के पानी
सारे गम चुप चुप सहती है।
श्रम इसका मैंने ना समझा
पीड़ा इसकी भी ना जानी
मार घसीटा सदा चलाई
कलम भी मेरी न चिल्लाई

नहीं करे अब हँसी ठिठोली
ना लिखती अब रोली गोली
ना दिखती मेरी हमजोली
ना बोले वो मेरी बोली
बनी पढ़ाकुर देखो इसको
ना खेलो भावों की होली
पढ़ लिख के वो बन के ज्ञानी
मनु मानद सारे कहती है।।

जीवन परिचय

नाम — सौम्या मिश्रा "अनुश्री"
जन्मतिथि — 02/06/1994
पिता का नाम — स्व श्री वीरेन्द्र कुमार मिश्रा
शैक्षिक योग्यता — जी.एन.एम. डिप्लोमा इन आयुर्वेद नर्सिंग वर्तमान में स्नातक में अध्यनरत।
मोबाइल — 8765806208

श्रमिक

मैं तो एक श्रमिक हूं,
श्रम से जी न चुराऊँ।
खून पसीना एक करूं,
तब जाकर रोटी पाऊँ।

परिवार को चलाना,
पहला है ये धर्म मेरा।
क्यूं न चलाएँ ठेला मैं,
यह तो है कर्म मेरा।

जो चाहे मोसे करवालो,
रहता हू हर पल तैयार।
कभी माथे ईटा ढोता,
कभी चिणाता मैं दिवार।

मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा,
सबमें मिला श्रम हमारा।
चाहे हो सड़कें सहर की,
बाँध दिया नदी किनारा।

मजदूर

मजदूर मेहनत,
कितनी करते हैं।
कल कारखान भी,
इनसे ही चलते हैं।

खून और पसीना,
जब श्रमिक बहाते।
तब वह दो वक्त की,
रोटी नसीब में पाते।

कल कारखाने का ,
पुर्जा पुर्जा ये कहता।
श्रमिक के इशारे से,
हमारा दिल धड़कता।

यह कैस इंसाफ है,
मेहनत करे मजदूर।
यस पाता मालिक है,
जो श्रम से कोसो दूर।

गर्व है मैं एक श्रमिक हूं

गर्व है मैं एक श्रमिक हूं
हाँ मैं एक श्रमिक हूं।
अपनी राहें खुद चुनता हूं।
अपना भाग्य लिखता हूं।

हाथों की इन रेखाओं में,
लिखा बनाऊँ ताजमहल।
किस्मत कहती तूं श्रमिक,
भाग्य नही सकता बदल।

थका हारा मैं घर जाकर,
जब रूखी सूखी खाता हूं।
छप्पन भोग से बढ़ कर,
स्वाद उस में मैं पाता हूं।

हाथ कहीं मैं न फैलाऊँ,
खून पसीने की मैं खाऊँ।
न सूगर ब्लड प्रेसर बढ़ता,
बिन गोली के मैं सो जाऊँ।

जीवन परिचय

नाम – इन्दू शर्मा शचि
पिता – राम कुमार जी शर्मा
माता – नरबदा देवी शर्मा
पति – श्याम सुन्दर शर्मा
जन्मस्थान – शिवसागर
व्यवसाय – गृहणी
एक्टिव मेम्बर – जागृति, रेणुका मातृ समिति–सदस्या नारायणी सा.ए.–सदस्या, साहित्य संगम–सदस्या श्याम ज्योति मंगलपाठ गायन की प्रमुख गायन सेविका।
मो. न. – 917017711275
वा.ए.न. – 9706994139

हौसला नहीं टुटा, उम्मीद नहीं हारी है

हौसला नही टुटा, उम्मीद नही हारी है
अभी तक मंथन जारी है

प्रेम में विफल होकर भी सफल हूँ
प्रेम की अपनी दुनियादारी है

प्यार में दुनिया देखी मैंने, तूने दुनिया में प्यार
अपनी अपनी समझदारी है

जिसे तुम दुनियादारी कहते हो
वो तो सरासर मक्कारी है

वक्त को ना बदला वक्त के साथ बदल गयी
पाखंड है कि खुद्दारी है

मौत तेरे इंतजार में

कुछ अरमानो को तोड़ा मैंने
कुछ ख्वाबों को छोड़ा मैंने
यादों का कारवाँ जला दिया
तेरे लिए मैंने अपना अतीत भुला दिया
जज्बात मर गये मेरे कहीं
भावनाओं को अपनी सुला दिया
गम भी बिछड़े मुझसे इस मुकाम पर
पाने खोने का अफसोस ना रहा इस शाम पर
सब कुछ कर डाला कुर्बान मैंने
सबकुछ दे दिया मैंने तेरे नाम पर
कि आओगी कभी तुम
जीता रहा इस ऐतबार में
कोई मोह ही ना रहा इस दुनिया से
सबकुछ भुलाया तेरे प्यार में
अब आ भी जाओ देख रहा हूँ रास्ता,,,
खड़ा हूँ मैं,, मौत,,, तेरे इंतजार में,,,,
ओमवीर करन द्वारा रचित

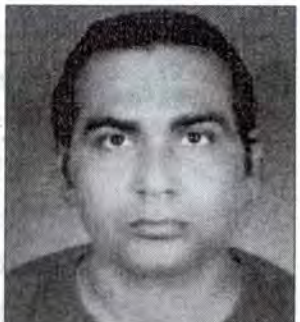

नाम – ओमवीर करन
माता का नाम – बिट्टी
पिता का नाम – छोटे लाल
शैक्षणिक योग्यता – एम.ए (लोक प्रशासन
विधा – कविता, लघुकथा, व्यंग्य, कहानियां विभिन्न राष्ट्रीय पत्रिकाओं एवं साँझा संकलनों में प्रकाशित ।
संप्रत्ति – भिलाई इस्पात संयंत्र में प्रचालक के पद पे कार्यरत
जन्मतिथि – 15/05/1980
सम्मान – अभिव्यक्ति सम्मान (2015), रचना सम्मान (2016), काव्यांकुर सम्मान (2016)
अनुभव – विभिन्न काव्य मंचों पे कविता पाठ
पता – 6/C, रिसाली सेक्टर भिलाई जिला–दुर्ग(छत्तीसगढ़)
मोबाइल नम्बर – 9301194425,9406276046
ईमेल – omveerkaran@gmail.com

आज हम मजदूर दिवस मना रहे पर वे सब अपनी हाड़ तपा रहे

आज हम मजदूर दिवस मना रहे पर वे सब अपनी हाड़ तपा रहे
फावड़ा, कुदाल, झौव्वा तसला, संग खुद अपना श्रम लगा रहे
सरकारी फाइल में इनके लिये हर योजना खास है
पर असली जिन्दगी में खुद श्रम से ही इनकी बुझती प्यास है
बांस की चाली बनाकर ये ऊंचे ऊंचे चढ़ जाते हैं
ईंट से ईंट जोड़जोड़कर ऊंची बिल्डिंग ये बनाते हैं
आलीशान महलों को ये अपने हुनर से बनाते है
पर बदले में बादशाहों से श्करश अपनें कटवाते हैं
कंकरीट के ढ़ाचे रचते अपने तन को जलाते हैं
रूखा सूखा खाकर येफुटपाथों पर सो जाते हैं
रोज दिहाड़ी, तनिक कमाई से घर अपना ये चलाते हैं
आशाओं पर फेर निराशा भूंखे रात बिताते हैं
सरकारी सुविधा अभाव में पसीना अपना बहाते हैं
कभी कभी सरकारी योजनाओं की बलि पर ये चढ़ जाते हैं
काम को ये भगवान मानकर हमारी सुविधा खूब जुटाते हैं
पर सच्चे दिल से सोचो भाई क्या क्या प्रतिकार ये पाते हैं
चींटी सदृश मेहनत कश बनकर ये सच्चे श्रमिक कहलाते हैं

जीवन परिचय

नाम	– श्रीमती कुमुद श्रीवास्तव (वर्मा)
पति	– श्री अजित वर्मा
पिता का नाम	– श्री जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव
माता का नाम	– श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव
जन्म तिथि	– 29.04.1966
शैक्षिक योग्यता	– स्नातकोत्तर विषय "दर्शन शास्त्र" इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
नर्सरी टीचर ट्रेनिंग	– महर्षि दयानंद विद्यालय संस्थान इलाहाबाद (आर्य कन्या) कंप्यूटर डिप्लोमा इन ओ लेवल वीर बहादुर जौनपुर यूनिवर्सिटी
साहित्यिक उपलब्धियां	– प्रशस्ति पत्र साहित्य संगम संस्थान पूरा
पता	– अजित वर्मा 545-KA/E190E, हंस नगर पारा लखनऊ

॥ ओ३म् ॥

गृह प्रवेश, वास्तु यज्ञ, गायत्री यज्ञ, नाम करण संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह आदि संस्कारों के लिये संपर्क करें।

आर्य समाज विधि (वैदिक - पद्धति) से प्रमाण - पत्र सहित सजातीय / अंतर्जातीय विवाह - संस्कार करने हेतु मिलें

वैदिक पद्धति से अंत्येष्टि संस्कार निःशुल्क किये जाते है।

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

कार्यालय : आर्य समाज - 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.vedicparinaya.com

www.indorearyasamaj.com www.aryasamj.co ✆ 9977 95 7777, 9977 98 7777 ☎ 0731-6066067

नोट - यज्ञ (हवन) से संबंधित हवन पात्र, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, हवन समिधा (लकड़िया) एवं वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

॥ ओ३म् ॥

रिश्ते सर्वजातीय रिश्ते

सर्व ब्राह्मण, सर्व राजपूत (क्षत्रिय), सर्व वैश्य, अग्रवाल माहेश्वरी, जैन सिक्ख, बौद्ध, गुजराती, महाराष्ट्रीयन पंजाबी, सिंधी, मारवाड़ी, बंगाली, मराठा, यादव, कायस्थ, सोनी, वर्मा, सेन एवं समस्त पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (OBC, SC, ST) आदि के (समस्त हिन्दू समाज के) युवक - युवतियाँ अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा प्रौढ़, विकलांग (अस्थिबाधित, दृष्टिबाधित, मूकबधिर आदि) वैवाहिक रिश्तों हेतु संपर्क कर, परस्पर स्व - स्व (अपने - अपने) गुण, कर्म, स्वभाव का उत्तम चयन कर, दिव्य वैदिक श्रेष्ठतम जीवन को प्राप्त करें।

समस्त हिन्दू समाज के अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा, विकलांग आदि वैवाहिक संबंधों हेतु बायोडाटा - फोटो भेज कर शीघ्र संपर्क करें।

संपर्क : आर्य समाज मंदिर 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016, मो. 9977957777, 9977987777

www.vedicparinay.com | E-mail: aryasamajindore@yahoo.com

।। ओ३म् ।।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत

गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर

प्रवेश प्रारंभ

महोदय/महोदया,

आपको अत्यंत हर्ष होगा कि युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती के गुरुवर प्रज्ञाचक्षु गुरु विरजानंद सरस्वती की स्मृति में गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर मध्यप्रदेश में छात्रों का प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। इस गुरुकुल के माध्यम से वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग का प्रचार-प्रसार होगा। अपने संतानों (पुत्रों) को गुरुकुल में प्रवेश दिला करके वैदिक संस्कृति हेतु अपना योगदान देवें अथवा एक ब्रह्मचारी का अभिभावक (धर्म माता-पिता) बनकर आर्थिक सहयोग भी कर सकते है।

विशेषताएँ

(1) आर्ष पाठ्यविधि
(2) संस्कृत संभाषण एवं इंग्लिश स्पोकन
(3) सस्वर वेदपाठ शिक्षा
(4) कम्प्यूटर ज्ञान
(5) योगा अभ्यास एवं शारीरिक प्रशिक्षण

नोटः- (1) प्रवेश के समय विद्यार्थी की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 5वीं पास अनिवार्य।
(2) सीमित स्थान अतः प्रवेश हेतु शीघ्र संपर्क करें।

निवेदक

स्वामी प्रणवानंद सरस्वती (दिल्ली)
कुलपति, गुरुविरजानंद गुरुकुल, इन्दौर
मो. 9868855155

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
एम.फिल., एम.ए. (संस्कृत, हिन्दी), शिक्षाशास्त्री, दर्शनाचार्य, योगाचार्य, ज्योतिषाचार्य
अधिष्ठाता- गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर
मो. 9977987777, 9977957777

प्रणवीर शास्त्री
व्याकरणाचार्य, साहित्याचार्य, शिक्षा शास्त्री
आचार्य- गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9202213410, 9467677589

पवन आर्य
साहित्याचार्य
उपाचार्य- गुरु विरजानंद गुरुकुल, इन्दौर (म.प्र.)
मो. 9971810944

कार्यालय

आर्य समाज मंदिर- 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016

॥ ओ३म् ॥

25वाँ सर्वजातीय परिचय सम्मेलन

(अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि)

दिनांक - 30 दिसम्बर 2018 (रविवार)

"सर्वजातीय परिणय स्मारिका" में अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि बॉयोडाटा-फोटो प्रकाशनार्थ

9977957777 एवं E-mail: aryasamajindore@yahoo.com

युवकों के लिये रु. 1100/- शुल्क जिसमें "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" में बॉयोडाटा-फोटा प्रकाशित होगा एवं "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" भी दी जायेगी।

युवतियों का रजिस्ट्रेशन निःशुल्क किन्तु "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" रु. 600/- में प्राप्त कर सकते है।

निम्नलिखित बैंकों में शुल्क जमा कर रसीद की जानकारी अवश्य देवें।

9977987777, 9977957777

बैंक का नाम	-	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	(Bank of Maharashtra)
खाता नाम	-	वैदिक राष्ट्र	(Vaidik Rashtra)
खाता क्रमांक	-	60036357384	
IFSC Code	-	MAHB0001396	
बैंक का नाम	-	भारतीय स्टेट बैंक	(State Bank of India)
खाता नाम	-	भानु प्रताप	(Bhanu Pratap)
खाता क्रमांक	-	53001335422	
IFSC Code	-	SBIN0030412	

आयोजक

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

कार्यालय : आर्य समाज - 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016
ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com | www.indorearyasamaj.com

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा आयोजित
साहित्य संगम सम्मान 2018 एवं अ. भा. कवि सम्मेलन की चित्रमय झांकिय

पं. योगेन्द्र महंत (राज्यमंत्री म.प्र.) को प्रतीक चिंह देते हुये आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, डॉ. अरुण श्रीवास्तव, श्री किसन लाल अग्रवाल, श्री संदीप शजर, भेंट करते हुये।

श्रीमती मीना भट्ट (लोकायुक्त जबलपुर एवं पूर्व सेवानिवृत्त जिल न्यायाधीश, जबलपुर) को **विद्या वाचस्पति (डॉक्ट्रेट)** मानद उपाधि प्रदान करते हुये साहित्य संगम संस्थान के पदाधिकारी गण।

संदीप शजर (प्रसिद्ध शायर, दिल्ली) को **विद्या वाचस्पति (डॉक्ट्रेट)** मानद उपाधि प्रदान करते हुये साहित्य संगम संस्थान के पदाधिकारी गण।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, विद्या वाचस्पति (डॉक्ट्रेट) मानद उपाधि प्रदान करते हुये साहित्य संगम संस्थान के पदाधिकारी गण।

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा साहित्य संगम सम्मान समारोह 2018 इन्दौर के अवसर पर **अभ्युदय काव्यमाला** का लोकार्पण करते हुये साहित्यकार

साहित्य संगम संस्थान के द्वारा **साहित्य संगम सम्मान समारोह 2018 इन्दौर** के अवसर पर 101 साहित्यकारों का सम्मान।

आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर की चित्रमय झाँकिया

ध्वजारोहण करते हुये श्री रामेश्वर पटेल (चेयरमेन प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल एवं विद्या सागर गर्ल्स स्कूल, इन्दौर), श्रीमती मंजू नोटियाल (प्रिंसिपल प्रज्ञा गर्ल्स स्कूल, इन्दौर) श्रीमती गायत्री सोलंकी (मंत्री आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर) आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार, श्री महेन्द्र भाई (राष्ट्रीय महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली), श्री राम कुमार सिंह (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक दिल्ली) श्री यशपाल 'यश' (प्रदेशाध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् राजस्थान) श्री विरेन्द्र योगाचार्य (महामंत्री, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा) डॉ. सुनील आर्य (दिल्ली) श्री हरीओम 'सरस' (होशंगाबाद) श्री रवि आर्य (व्यायाम शिक्षक), श्री तात्याराव शास्त्री (योगाचार्य) श्री कृपाल सिंह (व्यायामाचार्य) श्री प्रणवीर शास्त्री, श्री आर्येन्द्र आर्य (अंतरवेलिया), कु. लक्ष्य देवड़ा

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक. ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा। संपादक : आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार